Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 42 अंक-07
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 02 मई से 08 मई 2018 तक
प्र.ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया से प्र.ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

तीसरे विश्वयुद्ध... पृष्ठ- 2

अल्प और अति ग्लूकोज.. पृष्ठ- 4

धार्मिक शीतला देवी.. पृष्ठ- 5

अवधपुरी यह चरित... पृष्ठ- 8

सजा नही सोच. पृष्ठ- 12

- **माँ, माटी और मानुष का हो रहा है अपमान**
- **जिन्ना की सीधी कार्यवाही थी खुला जिहाद**
- **जेएनयू, बीएचयू सहित ६२ उच्च शिक्षण संस्थान स्वायत्त**
- **रविंद्रनाथ टैगोर की जयंती पर**
- **अंग्रेजी से मुक्ति के लिये प्रबल इच्छा शक्ति आवश्यक है**

स्वीडन ने भारत की एनएसजी सदस्यता की मांग का समर्थन किया

भारत की स्वीकार्यता सर्वाधिक : हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

स्वीडन ने भारत की परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह एनएसजी की सदस्यता की मांग का आज समर्थन करते हुए नई दिल्ली के वासेनार अरेंजमेंट एवं मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था समेत हाल में अंतरराष्ट्रीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था में शामिल होने का स्वागत किया। स्वीडन के प्रधानमंत्री स्टीफन लोफवेन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ वार्ता के दौरान भारत को अपने देश का समर्थन देने की बात कही। ४८ सदस्य देशों वाले परमाणु समूह में भारत की सदस्यता का मुख्य रूप से चीन शेष पृष्ठ 11 पर

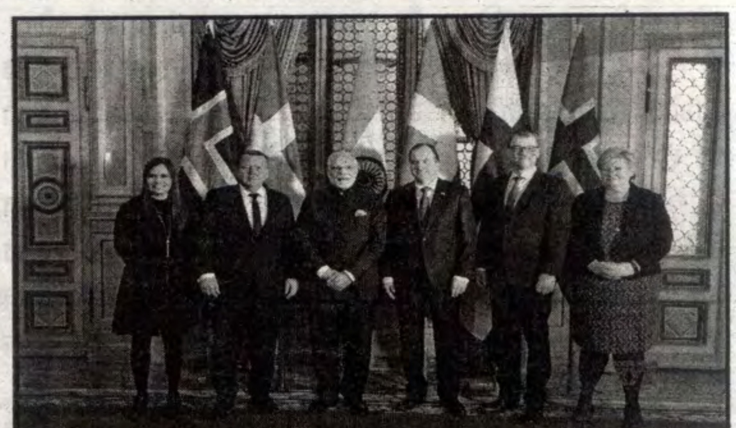

७ साल के भारतीय बच्चे ने रचा इतिहास, अफ्रीका की सबसे ऊंची चोटी पर फहराया तिरंगा

हिन्दू महासभा ने दी बधाई

• संवाददाता •

भारत के ७ साल के समन्यु पोथुराजु ने एक ऐसा कारनामा कर दिखाया है, जिससे हर भारतीय का सिर फक्र से ऊंचा हो गया है। समन्यु पोथुराजु ने अफ्रीकी महाद्वीप की सबसे ऊंची चोटी पर फतह हासिल कर देश का नाम रोशन किया है। हड्डियों को जमा देने वाले मौसम में बहादुरी का उदाहरण पेश करते हुए समन्यु ने तंजानिया की माउंट किलिमंजारो की ऊहुरु पर्वत की चोटी पर फतह हासिल कर वहां तिरंगा लहराया है। समन्यु ने इस उम्र पर अफ्रीका की सबसे ऊंची चोटी पर फतह हासिल कर यह दिखाया है कि उम्र हौसलें की उड़ानों को नहीं रोक सकती है। बता दें कि समन्यु अफ्रीका की इस चोटी पर जाने वाले दुनिया के सबसे कम उम्र के पर्वतारोही हैं। वह हैदराबाद के मूल निवासी हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक समन्यु अपने कोच के साथ २ अप्रैल को इस चोटी पर पहुंचे थे। चोटी पर पहुंचने के साथ ही समन्यु ने अपने बैग ने तिरंगा निकालकर समुद्र तल से ५८६५ मीटर ऊंचाई पर फहराया। अपनी इस जीत पर समन्यु ने कहा कि जब वह अपने कोच के साथ उन्होंने चढ़ाई शुरू की थी तब बारिश हो रही थी, रास्ते पत्थरीले जिसको दिखने के बाद उन्हें डर हुआ। उन्होंने कहा कि थोड़ी दूर चलने के बाद ही उनके पैरों में दर्द शुरू होने लगा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और थोड़ी देर आराम करने के बाद दोबारा से चढ़ाई शुरू। समन्यु का कहना है कि उन्हें पत्थरीले रास्तों शेष पृष्ठ 11 पर

ईशोपनिषद

छोटा सा पर बड़ा प्यारा सा ग्रन्थ है –ईश–उपनिषद्। यह नाम इसलिए पड़ा कि इस ग्रन्थ का पहला अक्षर ईश है। उपनिषद् का अर्थ होता है–रहस्य। ऐसा ज्ञान जो छिपा हुआ है, आम आदमी की पहुंच से परे है–वह उपनिषद् है। ऋषिगण ध्यान की अतल गहराइयों में उतरते थे। वहां उन्हें जो मोती मिलते, जो दिव्य अनुभूतियाँ उन्हे प्राप्त होती, उन्हें आपस में बांट लेते। उन अद्‌भुत अनुभूतियों का संग्रह उपनिषद् बनते।

ईशोपनिषद् में कुल अठारह मंत्र हैं। प्रत्येक मंत्र में प्रचुर सौन्दर्य है। ऋषि ने ध्यान निद्रा में अनुभव किया, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ईश्वरीय शक्ति से व्याप्त है। एक छोटे से कण में भी उतना ही ईश्वर है जितना पहाड़ में। कांटे में भी ईश्वर है जितना पहाड़ में। कांटे में भी ईश्वर की वही सुगन्ध है जो गुलाब में। खोजी आंखें, समर्थ आंखे कहीं भी ईश्वर को पा सकती हैं। तो ऋषि नेउद्‌घोषणा की–ईशा वास्यम् इदं सर्वम्–सब कुछ में ईश है और ईश में सब कुछ है।

जब सब कुछ ईश्वर से भरा हुआ है जो कुछ भी निन्दनीय, त्याज्य कैसे हो सकता है, कुछ भी बुरा कैसे हो सकता है। धन में भी वही प्यारा प्रभु है, पुरुष स्त्री में भी परमात्मा की ही सुवास है। सारा ऐश्वर्य उसी प्रभु का फैला हुआ है और यदि हम संसार की, प्रभु के ऐश्वर्य की निन्दा करे तो उसी प्रभु की ही निंदा होगी।

इस सत्य का अनुभव कर उपनिषद् ऋषि ने कहा– भुञ्जीथाः। इस सांर का उपभोग करो, उपयोग करो। इस संसार को अपनी सुख–सुविधा और आनन्द का साधन बनाओ और

प्रभु के द्वारा प्राप्त ऐश्वर्य को सीढ़ी बनाकर ऊपर चढ़ जाओ। संसार सीढ़ी है। जो सीढ़ी से चिपक जाता है, सीढ़ी को ही मंजिल मान लेता है वह लक्ष्य से चूक जाता है। जीवन से चूक जाता है। सीढ़ी हमेशा बनी रहेगी पर जीवन हमेशा नहीं रहेगा। इसलिए जीवन खत्म होने से पहले सीढ़ी का उपयोग कर लो। इसलिए ऋषि सावधान भी करता है त्यक्तेन भुञ्जीथाः। त्यागपूर्वक संसार का उपभोग कर। ऊपर चढ़ने का उपाय यही है कि सीढ़ी पर खड़े होकर सीढ़ी से चिपको नहीं, ऊपर और अपर नित्प्रति कदम बढ़ाते रहो। मा गृधः साधनों के प्रति लोभ मत करो।

जब साधन ही प्रिय हो जाते हैं तब साध्य छूट जाता है। पड़ाव पर जो पक्का घर बना लेता है, मंजिल उससे रूठ जाती है। पड़ाव पर विश्राम करो, उससे चिक कर मत बैठ जाओ। धन सम्पत्ति को लोक और परलोक का साधन बनाओ, न कि उस पर कुण्डली मारकर बैठ जाओ। क्योंकि कस्य स्विद्धनम् यह धन किसका हुआ है? रेत को मुट्‌ठी में भींचने की कोशिश करो, वह फिसल कर निकल जाती है। लक्ष्मी तो चंचल होती है। बादल में बिजली की तरह कभी यहां चमकती है तो कभी वहां। अतः संसार परिवर्तनशील है– इस नियम को अच्छे से देख लो। इसलिए इससे इतना ही प्रेम करो जो तुम्हारे दुःख का कारण न बने। ब्रह्माण्ड के कण–कण में ईश्वर फैला हुआ है। ईश्वर ने संसार को ऐश्वर्य और सम्प्रदाओं से भर रखा है। इस संसार का बिना चिपके उपयोग, उपभोग करते हुए ईश्वर को पा लो, जैसे यात्री बिना नाव से चिपके, नाव को साधन बनाकर पार उतर जाता है।

न घर को छोड़ो न हर को भूलो जिन्दगानी में।
जग में ऐसे रहो जैसे नाव रहती है पानी में।।

सुदर्शन राय

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह आप कुछ सवालों के जवाब से घिरे रहेंगे। दिल और दिमाग में द्वन्द चलेगा जिसके परिणाम स्वरूप आप अनिर्णय की स्थिति में रहेंगे। आप–अपने कार्यो के प्रति सकारात्मक विचार रखें तो हितकर रहेगा।

वृष : जीवन को आशावादी बनाना आपके लिए अतिआवश्यक है क्योंकि आप जिस उहापोह में पड़े है उससे प्रगति में बाधा ही पड़ेगी। हर कार्य को दिल लगाकर करना आप–अपनी प्राथमिकता में शामिल कर लें तो समस्यायें स्वतः कम पड़ जायेंगी।

मिथुन : इस सप्ताह कुछ लोगों के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी जिसके परिणाम काफी हद तक लाभकारी प्रतीत होंगे। अपने सामान की सुरक्षा के प्रति आपको सर्तक रहने की आवश्यकता है। सन्तान के दायित्वों की पूर्ति करने के लिए आपको काफी संघर्ष करना पड़ सकता है।

कर्क : इस सप्ताह आपके परिवार में सुखद वातावरण रहेगा जिससें सभी लोग आपस में सहभागिता का अनुभव करेंगे। यदि आप कोई योजना बना रहें है, तो उसे गुप्त ही रखें। सन्तान की शिकायतों को नजरअंदाज करने का प्रयास न करें अन्यथा बाद में समस्यायें आपको घेर सकती है।

सिंह : इस सप्ताह कुछ लोग दूसरों की समस्याओं को अपनी समस्या समझकर व्यर्थ में परेशान हो सकते है। छोटी–छोटी बातों को लेकर जीवन साथी से टकराव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जिसे आप बहुत चाहते है, उससे कोई अपेक्षा न रखें तो अच्छा रहेगा।

कन्या : इस सप्ताह आपको गहरे विचार और प्रेरणादायक कदम सफलता की ओर अग्रसर कर सकते है। घर और ऑफिस में सामंजस बनायें रखें अन्यथा पारिवारिक समस्यायें उत्पन्न हो सकती है। किसी कार्य में अस्थाई तौर पर रूकावटें आ सकती है परन्तु घबराने की आवश्यकता नहीं है।

तुला : इस सप्ताह आपकी कुछ समस्याओं का समाधान होने की सम्भावना है। सामाजिक समबन्धों में मजबूती आयेगी। ससुराल पक्ष की ओर कोई सुखद समाचार मिलने की सम्भावना है। सन्तान की ओर से मन प्रसन्न रहेगा।

वृश्चिक : कुछ लोग इस सप्ताह अपने अतीत को लेकर चिन्तित रहेंगे जिसके फलस्वरूप दिमाग में नकारात्मक विचार आने की आशंका रहेगी। नयें कार्यो को करने में आप असहज महसूस करेंगे। स्वास्थ्य में कुछ ढीलापन आ सकता है।

धनु : इस सप्ताह आपका नयें व्यक्ति से व्यावसायिक अनुबन्ध हो सकते है, परन्तु जो भी करें उसे लिखित रूप में अपने पास अवश्य रखें। पारिवारिक स्थितियॉं सन्तोषजनक प्रतीत होगी। राय–मशविरा लेकर किये गये कार्यो में सफलता मिलने के अधिक आसार है।

मकर : इस सप्ताह आपकी कार्यशैली से प्रभावित होकर लोग आपकी ओर आकर्षित होंगे जिससे सामाजिक स्तर में मजबूती आयेगी। माता व पिता के सहयोग व सानिध्य का आपको भरपूर लाभ मिलेगा। घरेलू खर्चो पर धन का व्यय बढ़ने की सम्भावना है।

कुम्भ : इस सप्ताह आपके रूके हुये कार्यो में प्रगति होगी जिससे आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। धन आयेगा परन्तु उसका उपयोग करें न कि दुरूप्रयोग। अन्तःकरण की आवाज को आपको आध्यात्मिक चिन्तन की ओर प्रेरित कर सकती है।

मीन : इस सप्ताह आपके मन में लोगों की सहायता करने की भावना जाग्रत होगी। परिश्रम करने में मन थोड़ा सा उदासीन हो सकता है। कुछ लोगों को मित्रों का सहयोग लेना पड़ सकता है। स्वादिष्ट व्यंजनों को स्वाद चखने का अवसर प्राप्त होगा।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्‌भगवत गीता

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।।

वे सोचा करते हैं कि मैंने आज यह प्राप्त कर लिया है और अब इस मनोरथ को प्राप्त कर लूँगा। मेरे पास यह इतना धन है और फिर भी यह हो जायेगा।।१३।।

असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी।।

वह शत्रु मेरे द्वारा मारा गया और उन दूसरे शत्रुओं को भी मैं मार डालूँगा। मैं ईश्वर हूँ, ऐश्वर्य को भोगने वाला हूँ। मैं सब सिद्धियों से युक्त हूँ और बलवान् तथा सुखी हूँ।।१४।।

आढयोऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः।।
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजानसमावृताः।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ।।

मैं बड़ा धनी और बड़े कुटुम्बवाला हूँ। मेरे समान दूसरा कौन है? मैं यज्ञ करूँगा, दान दूँगा और आमोद–प्रमोद करूँगा। इस प्रकार अज्ञान से मोहित रहने वाला तथा अनेक प्रकार से भ्रमित चित्तवाले मोहरूप जाल से समावृत और विषयभोगों में अत्यन्त आसक्त आसुर लोग महान् अपवित्र नरक में गिरते हैं।।१५–१६।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 02 मई से 08 मई 2018 तक

अध्यक्षीय

माँ, माटी और मानुष का हो रहा है अपमान

बंग भूमि हिन्दूमन के जागरण की साक्षी है तो उसके आहत होने की भी। उसने देश जगाया तो वहीं कम्युनिस्ट शासन की प्रायः तीन दशक को स्पर्श करती विभीषिका भी लोगों को झेलनी पड़ी। बंगाल ने अग्नि धर्मा क्रांतिकारी भी दिए, आध्यात्मिक जागरण के पुरोधा दिए, विज्ञान, साहित्य एवं कला के विश्वविख्यात हस्ताक्षर दिए तो अंततः ममता दी भी दीं। जिनका कार्यकाल हिंदुओं पर आघातों के लिए जाना जाएगा, जब मुहर्रम के लिए दुर्गा विसर्जन ही रोक दिया गया। किसी को बंगाल के अकाल की याद है, तीस लाख भारतीयों को चर्चिल और उसके ब्रिटिश कारिन्दों ने तड़प–तड़प कर मरने पर मजबूर किया था। वह संसार का सबसे भीषण मानव निर्मित अकाल था। यद्यपि कुछ विश्लेषक मृतकों की आंकड़ा २०–२५ लाख के बीच बताते हैं उस समय चर्चिल ने कहा था मैं हिन्दुस्तानियों से नफरत करता हूं। वे पशुतुल्य लोग हैं जिनका धर्म भी पशुवत है। बंगाल का दुर्भिक्ष उनकी अपनी करनी का फल था जो खरगोश की तरह बच्चे पैदा करते हैं। यह दुर्भिक्ष आजादी के बाद कुशासन तथा अराजक राजनीति के रूप में फैला। जो बंगाल विधानचंद्र राय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे राजनेताओं के लिए जाना गया। शीघ्र ही नक्सलवाद – माओवाद के रक्त रंजित दौर में डूबा। तीन हजार से ज्यादा लोग मारे गए, साढ़े तीन लाख जनजातीय लोग विस्थापित हुए। यह आजादी के बाद का बंगाल था। जिसने १६४६ में मुस्लिम लीग के नेता जिन्ना के उकसाने पर हजारों हिन्दुओं को मारे जाते देखा था। वह तारीख थी १६ अगस्त १६४६। पहले अंग्रेज, फिर मुसलमान कट्टरपंथी, उसके बाद प्रायः साढ़े तीन दशक–३३ वर्ष तक चला कम्युनिस्ट शासन। धर्म पर आघात, गरीबों का शोषण, शिक्षा संस्थानों में मार्क्सवादी यूनियनों का इतना दखल तथा सरकारी दमन कि रामकृष्ण मिशन जैसी संस्था को भी स्वयं को अहिन्दू और नया सम्प्रदाय घोषित कर अल्पसंख्यक बनने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दाखिल करनी पड़ी। हिंदुओं के लिए दुखों का पहाड़ था कम्युनिस्ट शासन। जब ममता दीदी ने परिवर्तन का उद्घोष कर मां–माटी–मानुष, का राजनीतिक नारा दिया तो कम्युनिस्ट शासन से त्रस्त जनता ने उनको भारी मतों से जिताया। लगा आतंक, भ्रष्टाचार, अहिन्दू आक्रमणों से बंगाल बचेगा। लेकिन सिर्फ नाम परिवर्तन हुआ राज परिवर्तन नहीं। गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार एक ओर तो दूसरी ओर मुस्लिम जिहादी तत्वों का हिन्दुओं पर आघात बढ़ा। हुगली के आसपास के क्षेत्र पर एक नजर दौड़ाएं तो बंगाल के दुर्भिक्ष जैसा दृश्य दिखता है। यह है बंगाल का २०१८ का कटु सत्य। बंगाल निश्चित रूप से एक बड़े परिवर्तन से गुजर रहा है। उसे प्रगतिशील, विज्ञानसम्मत, बहुलतावादी, भारतीय समाज के रूप में जीवित रहना है या नहीं। वहां मां दुर्गा, विवेकानंद के भक्तों का जीवन सुरक्षित रहेगा या नहीं। मुस्लिम कट्टरवाद को पहले अंग्रेजों का सहारा मिला फिर कम्युनिस्टों ने उसे पाला पोसा और अब ममता बंद्योपाध्याय, जो मुस्लिम बहुल इलाकों में मुस्लिम स्कार्फ पहन अल्लाहो अकबर तक का नारा लगाती हैं। अब हिंदू विरोधी जिहादी अभियानों को मानो सरकारी संरक्षण मिल गया है। बंगाल आज देश के सबसे पिछड़े और उद्योगविहीन प्रदेशों में शामिल हुआ है। इंफोसिस टाटा जैसे बड़े उद्योग जो लाखों लोगों को रोजगार देने वाले उद्यम स्थापित करने के लिए विख्यात हैं, बंगाल छोड़ चुके हैं। प्रदेश की प्रशासनिक व्यवस्था तृणमूल कार्यकताओं के दबंगपन से चरमरा गई है। गोरखा लैंड आंदोलन में दार्जिलिंग के साथ अन्याय और देशभक्त हिंदू निष्ठ गोरखाली समाज के प्रति अन्यायपूर्ण नीति अपनाने के लिए तृणमूल सरकार की काफी आलोचना हुई थी। यह बंगाल के संस्कृतनिष्ठ समाज के जागरण की बेला है, जो अपनी आंखों में आमार शोनार बांगला का स्वप्न संजोये है। उनके लिये यह समय लोकतांत्रिक युद्ध के रणांगन में कूद पड़ने का है। विजय प्राप्त करने के अलावा और कोई विकल्प है ही नहीं। यह शोनार बांगला नहीं, यहां मां, माटी और मानुष तीनों का अपमान होता है। यहां सुभाष बोस की स्वातंर्त्य ज्वाला पर मुस्लिम जिहाद की राख फेंकी जाती है, यहां प्रीतिलता वाड्डेदार जैसे क्रांतिकारिणी की आत्मा सिसकती है। वह शोनार बांगला, जो कवि गुरु रवींद्र ठाकुर की वाणी में गुंजित हुआ। जिसे श्यामाप्रसाद और नजरूल इस्लाम की मित्रता ने नूतन आभा दी। आज भ्रष्ट, विधर्मी, विद्रूप तत्वों का शिकार बना है।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

तीसरे विश्वयुद्ध की आहट

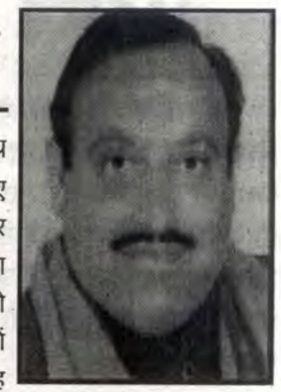

सीरिया में अजान की आवाज मिसाइलों के शोर के साथ सुनाई दी। अमेरिका ने एक बार फिर विश्व का रहनुमा बनते हुए तथाकथित शांति पाठ और दुष्टों का संहार करने के लिए सीरिया पर हमला बोला। इसमें उसका साथ फ्रांस और ब्रिटेन ने दिया। सीरिया पिछले सात सालों से गृहयुद्ध में फंसा हुआ है। इसे गृहयुद्ध कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि यहां लड़ाई केवल सीरिया की सरकार और विद्रोहियों के बीच नहीं है, बल्कि इसमें बाहरी तत्वों का दखल भी भरपूर है। यह कहा जा सकता है कि बाहरी देशों की मदद से ही दोनों पक्ष लड़ाई जारी रखे हुए हैं। अगर दखलंदाजी नहीं होती, तो शायद सरकार और विद्रोही आपस में वार्ता कर मतभेदों को दूर करने, शिकायतों के समाधान तलाशने की कोशिश कर सकते थे। पर इससे शांति स्थापित होती, जिससे पूंजीवाद का नुकसान होता। सीरिया में इस वक्त जो हालात बने हैं, वैसे ही हालात इराक में भी थे। वहां सद्दाम हुसैन तानाशाही चला रहे थे, लेकिन बहुत से सुधारवादी, प्रगतिशील काम भी कर रहे थे, जिससे इराक की जनता का बड़ा वर्ग फायदे में था। सद्दाम हुसैन अमेरिका की धौंस में नहीं आते थे। जिसका बदला अमेरिका ने उस पर हमला करके लिया। विनाशकारी हथियार रखने का इल्जाम लगाकर पूरे इराक को तबाह किया गया, सद्दाम हुसैन को फांसी दे दी गई। अमेरिकी जनता पर इस युद्ध का भार थोपा गया। बाद में कहा गया कि इराक में विनाशकारी हथियार नहीं मिले। अमेरिका की इस ज्यादती पर संयुक्त राषष्ट्र संघ ने कोई सख्ती नहीं दिखाई। दुनिया के अधिकतर देश भी खामोश ही रहे। अब अमेरिका वही खेल सीरिया में खेलने पहुंच गया है। यहां अरब क्रांति के बाद शुरू हुए गृहयुद्ध में अमेरिका ने विद्रोहियों की मदद की। जबकि सीरियाई राष्ट्रपति बशर अल असद का साथ देने रूस सामने आया। उन्हें अपने पिता से सत्ता विरासत में मिली। लेकिन वे सीरिया में सुधार और खुलेपन के हिमायती थे। पर कट्टरपंथी ताकतें उनकी प्रगतिशीलता में रोड़ा बन गईं। २०१३ में सीरियाई सरकार पर आरोप थे कि उसने रासायनिक हथियारों का इस्तेमाल किया है। लेकिन तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने सीरिया पर कोई कार्रवाई नहीं की थी। वे तब तक शांति का नोबेल पुरस्कार हासिल कर चुके थे। वर्तमान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर तो ऐसे किसी सम्मान का बोझ या दबाव भी नहीं है। वे शुरू से अमेरिका फर्स्ट यानी अमेरिका के व्यापारिक हितों को सबसे ऊपर रखे हुए हैं। इसलिए इस बार भी जब सीरियाई सरकार पर आरोप लगा कि उसने डूमा शहर में रासायनिक हमले किए हैं, तो अमेरिका ने पहले चेतावनी दी और फिर हमला बोल दिया। अमेरिका ने कुल १२० मिसाइलें दागीं, जिसमें एक कीमत करीब साढ़े ६ करोड़ रुपए है, यानी कुल ११ सौ करोड़ रुपयों की मिसाइलें इस हमले में खर्च हुईं। शस्त्रगार में ये मिसाइलें रखी रहतीं तो हथियार निमार्ता और मिसाइलें कैसे बेच पाते। अब फिर से सौ–डेढ़ सौ मिसाइलों की बिक्री की गुंजाइश बढ़ गई है। साथ ही विश्वयुद्ध जैसी नौबत बनेगी तो अमेरिका के साथ–साथ अन्य देश भी अपना रक्षा बजट बढ़ाएंगे। जनता को समझाएंगे कि तुम्हारी शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास के बजट में कटौती करके हम देश को मजबूत बना रहे हैं। राष्ट्रप्रेम के नए पाठ लिखे जाएंगे, जिसमें जनता से ही त्याग मांगा जाएगा। कहने को लड़ाइयां देशों के बीच होती हैं, लेकिन उसका बोझ तो जनता ही उठाती है। ट्रंप जैसे व्यापारी जानते हैं कि जनता पर बोझ डालकर अमीर कैसे बना जाता है। बहरहाल सीरिया में जिस रासायनिक हथियार के इस्तेमाल का आरोप लगाया गया, उससे वह साफ इंकार कर रहा है। रूस भी कह रहा है कि रासायनिक हथियारों का उपयोग नहीं हुआ है। अमेरिकी रक्षा मंत्री जिम मैटिस का भी कहना है कि सात अप्रैल को डूमा में सारिन गैस समेत दूसरे रासायनिक हथियारों के हमले की अमेरिका ने अभी पुष्टि नहीं की है। अलबत्ता उन्होंने क्लोरीन के इस्तेमाल की बात जरूर कही है। हालांकि क्लोरीन का इस्तेमाल औद्योगिक रूप से भी होता है और इससे पहले कभी अमेरिका ने इसके इस्तेमाल पर सैन्य कार्रवाई नहीं की है। तो सवाल यह है कि जब यही तय नहीं है कि सीरिया ने रासायनिक हथियारों का उपयोग किया है, तो फिर उस पर कार्रवाई क्यों की गई और अमेरिका ने किस अधिकार से उस पर मिसाइल दागीं। अगर सीरिया की सत्ता मानवता के खिलाफ काम कर रही है, तो संयुक्त राष्ट्र संघ ने उस पर सीध ी कार्रवाई क्यों नहीं की। अब अगर अमेरिका के हमलों का जवाब रूस देता है और फिर ईरान, चीन भी साथ आते हैं। तो क्या इससे तीसरे विश्वयुद्ध के हालात नहीं बनेंगे, जो पहले के युद्धों से अधिक खतरनाक होंगे, क्योंकि सबके पास परमाणु हथियार हैं। मिसाइल हमले के बाद अमेरिका का दावा है कि मिशन पूरा हुआ। जबकि सीरिया कह रहा है कि उसने अधिकतर मिसाइलों को नष्ट कर दिया। यह भी कहा जा रहा है कि जिन सैन्य ठिकानों पर हमले हुए, उन्हें सीरिया ने पहले ही खाली करा लिया था। कुल मिलाकर दोनों पक्षों के अपने–अपने दावे हैं और कौन सही है, कौन गलत, इसका निष्पक्ष निर्णय सुनाने वाला कोई नहीं है। दुनिया के लिए यह स्थिति गंभीर है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

अल्प और अति ग्लूकोज रक्त संबंधी जटिलताएँ

डायबिटीज रोग ऐसा है जिसमें थोड़ी सी भी लापरवाही करने पर जानलेवा जटिलताएँ पैदा हो जाती हैं। डायबिटीज पेशेंट में दो प्रकार की जटिलताएँ आमतौर पर देखी जाती हैं। यह दो प्रकार की हैं–

१. अल्प ग्लूकोजरक्तता यानी हाईपोग्लाइसीमिया।

२. अति ग्लूकोजरक्तता यानी हाईपरग्लाइसीमिया।

वास्तव में यह दोनों जटिलताएँ मधुमेह रोग की अति गंभीर अवस्थाएँ मानी जाती हैं।

अल्प और अति ग्लूकोज स्तर में अन्तर

डायबिटीक पेशेंट को अपने जीवन में इन दोनों जटिलताओं का सामना किसी भी समय करना पड़ सकता है। अतः इन रोगियों को दोनों ही परिस्थितियों के विषय में उनके लक्षणों के आधार पर ठीक से जानने का प्रयास करना चाहिए। इन दोनों जटिलताओं के लक्षण निम्न तालिका से समझे जा सकते हैं–

हाईपोग्लाइसीमिया (अल्प ग्लूकोज स्तर) के लक्षण

❖ यह बेहोशी, औषधियों के अधिक प्रयोग अथवा पर्याप्त मात्रा में समय पर आहार न लेने से रक्त ग्लूकोज स्तर के अत्यधिक घटने से उत्पन्न होती है।

❖ इसकी शुरूआत तीव्रगति से होती है। यह औषधीय प्रयोग के तुरन्त बाद से लेकर १५ से ३० घंटे बाद तक कभी भी प्रकट हो सकती है।

❖ इसमें रोगी की प्यास ज्यादा नहीं बढ़ती, बल्कि भूख बहुत बढ़ जाती है।

❖ रोगी को बहुत ज्यादा न्तपदम नहीं बनता, रोगी को कभी–कभी वमन भी हो सकती है।

❖ रोगी की नाड़ी की गति तीव्र पर मजबूत रहती है।

❖ श्वसन दर सामान्य और दुर्गन्ध रहित होती है। शरीर में कंपकंपी हो सकती है।

❖ रोगी की त्वचा निर्बल और पीली पड़ सकती है।

हाईपरग्लाइसीमिया (अति ग्लूकोज स्तर) के लक्षण

❖ बेहोशी की स्थिति, उपचार में लापरवाही बरतने और रोग को गम्भीरता से न लेने पर रक्त ग्लूकोज स्तर के अत्यंत बढ़ने से उत्पन्न होती है।

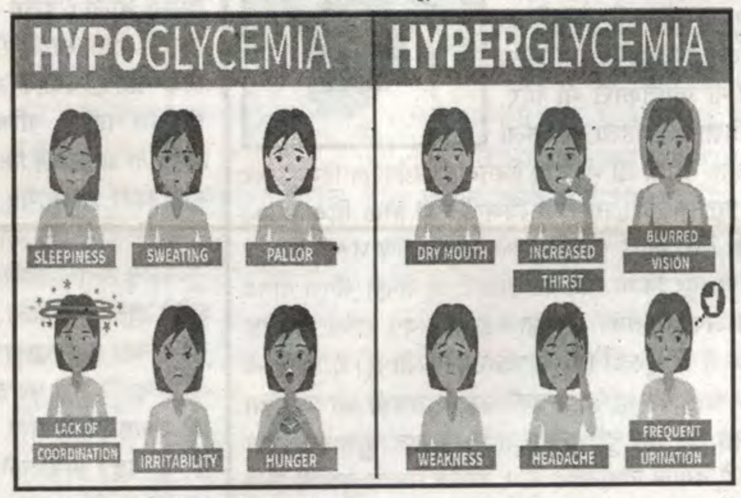

❖ अक्सर इस बेहोशी की शुरूआत धीमी गति से होती है। बेहोशी आने में कई दिन से कई सप्ताह और माह का समय लगता है।

❖ इसमें रोगी की प्यास बहुत बढ़ जाती है, किन्तु भूख सामान्य से कम लगती है।

❖ बार–बार न्तपदम का प्रेशर बनता है। रोगी को बार–बार वमन आती है।

❖ नाड़ी कमजोर पर गति तेज रहती है। श्वसन गति तीव्र, गहरी और सड़े फलों जैसी दुर्गन्ध से युक्त रहती है।

❖ रोगी की त्वचा शुष्क और लाल रंग की हो सकती है।

हाईपोग्लाइसीमिया से बचने के उपाय

❖ मधुमेह के रोगियों, विशेषकर जिन्हें नियमित रूप से इंसुलिन लेनी पड़ती है, सदैव ही अल्प ग्लूकोज रक्तता के प्रति सजग रहना चाहिए। इस समस्या से बचने का एकमात्र व सर्वोत्तम उपाय यही है कि इन रोगियों को अपना निर्धारित आहार पर्याप्त मात्रा में निश्चित समय पर अवश्य कर लेना चाहिए।

❖ इन्सुलिन की मात्रा में कोई भी घट–बढ़ बिना रक्त और मूत्र जाँच किए अथवा चिकित्सक से परामर्श लिए कदापि नहीं करनी चाहिए।

❖ ऐसे मधुमेह रोगियों को जिनके खून में ग्लूकोज की मात्रा जल्दी–जल्दी घटती–बढ़ती है या जो इन्सुलिन का उपयोग करते हैं, उन्हें अल्प ग्लूकोज रक्तता के लक्षणों को जानना चाहिए और अपने साथा सदैव बिस्कुट, फल, ग्लूकोज, कैण्डी, शुगर क्युब्स आदि रखनी चाहिए।

❖ सदैव अपने साथ डायबिटीक पेशेन्ट (हाईपोग्लाइसीमिया) का आइडेन्टी कार्ड जरूर साथ रखें और तदुपरान्त यात्रा पर निकलें।

हाईपरग्लाइसीमिया से बचने के उपाय

रक्त ग्लूकोज का स्तर ज्यादा बने रहना ही हाईपरग्लाइसीमिया कहलाता है। जब मरीज के खून में ग्लूकोज का स्तर ज्यादा बढ़ जाए कि उसे बेहोशी होने लगे तो यह स्थिति गंभीर बन जाती है।

❖ इसके लिए भोजन पर नियंत्रण रखना अनिवार्य है। आहार में मीठा बिल्कुल नहीं और कार्बोहाइड्रेट्स जिसमें मीठापन हो या भारी मात्रा में हों उनका परहेज करें।

❖ अपनी दवा समय–समयपर लेते रहें और इंसुलिन की गोलियाँ या इन्जैक्शन भोजन से १५–२० मिनट पहले ले लिया करें।

❖ यात्रा में या अकेले में कहीं भी जाएँ तो अपना हाईपरग्लासीमिया आइडेन्टी कार्ड रखें और इन्सुलिन भी साथ रखें।

❖ सुबह खाली पेट करेले, नीम का मिक्स जूस पिया करें।

हे वीर चलो.....

हे वीर चलो रणधीर चलो कर में लेकर शमशीर चलो
सीमा पर शत्रु सक्रिय है, उसका वक्षस्थल चीर चलो
कर रहा निरंतर वह हमला समझौता भूल गया शिमला।
समझाया उसको कई बार, शैतान नहीं अब तक सम्भला
बन भीमसेन की गदा चलो, अर्जुन का बनकर तीर चलो।
श्री रामचन्द्र ने रावण को जैसे मारा, लंका जारी।
भूखण्ड नष्ट कर दो उसका, फिर भूल जाये वह बटमारी
अब शौर्य तुम्हारा जग देखे, बन कर तुम एक नजीर चलो
श्रृंगार करो हथियारों से, अंगार भरो अपने कर में
अब अग्निबाण की वर्षा हो, लग जाये आग शत्रु घर में।
शत्रु का दो भूगोल बदल, बदलों उसकी तकदीर चलो।
पहले हो शत्रु सूर्य अस्त, फिर गंददारों से निपटेगें।
दुश्मन का शीश कटा जिस पल गद्दारों के स्वर बदलेंगे।
हो मुल्ला या फिर अब्दुल्ला करना है इन्हें हकीर चलो।
अपना भारत हो फिर अखण्ड हो खण्ड–खण्ड नापाक देश।
अब और प्रतिक्षा करों नहीं उस पर कर दो हमला विशेष।
बन्धक हो फिर उसकी सेना, बन्दी हों शाह वजीर चलो।
हो बन्द रेल समझौते की बस के पहियें भी थम जायें।
अब खेल नही हो युद्ध करो, उसके हो दूर भरम जायें।
उसने तोड़ी है कई बार तुम तोड़ों सभी लकीर चलों।
कापुरुष हमारे नेतागण बस जायें विदेशों में जाकर।
अब आर पार का युद्ध छिड़े रह जाये धरती थर्रा कर।
भूतल नक्शे से दुश्मन की अब साफ करें तस्वीर चलों।

हितेश कुमार शर्मा

हैल्दी बनने के लिए रोजाना कितना भोजन लें

कार्बोहाइड्रेट्स : खाद्य पदार्थों में मीठापन होना कार्बोहाइड्रेट का द्योतक है। शक्कर और गुड़ में कार्बोहाइड्रेट्स बहुतायत में मिलते हैं जो सरलता से पच जाते हैं और शक्ति देते हैं। एक प्रौढ़ व्यक्ति के लिए ४० ग्राम गुड़ या शक्कर रोजाना जरूरी है यदि वह शुगर पेशेंट नहीं है।

प्रोटीन : शरीर में कोशाणुओं का निर्माण और नष्ट हुए कोशाणुओं का पुनर्निर्माण प्रोटीन से होता है। कार्बोहाइड्रेट्स की तरह प्रोटीन शक्ति भी देता है। दालों में प्रोटीन मिलता है। दाल में २०–२५ प्रतिशत प्रोटीन होता है।

वसा : पदार्थों में चिकनाई होना वसा का द्योतक है। तेल, वनस्पति घी वसा वाले खाद्य हैं।

लोहा : लोहा रक्त बनाता है। शरीर में लोहे की कमी से रक्त बनने में कमी हो जाती है जिससे रक्तक्षीणता (एनीमिया) रोग हो जाता है। यह स्त्रियों को अधिक होता है।

खून की कमी (एनीमिया) की पहचान : रक्त की कमी से यकृत (लीवर) भोजन नहीं पचा पाता। इससे गैस बनती है। आँखों की नीचे की पलक में सफेदी, त्वचा पीली, थकावट, मूर्च्छा, पेट खराब रहता है और दुर्बलता बढ़ती जाती है।

लोहा (आयरन) प्राप्ति के स्रोत : लोहा खाया नहीं जाता, इसे भोजन से प्राप्त करना होता है। टमाटर, पालक, शहद, बथुआ, केला, सेब, गाजर आदि में आयरन बहुत मिलता है। चौलाई (प्रतिग्राम में १.४ मिग्रा.), हरा धनिया (प्रतिग्राम में १० मिग्रा.), सूखी सोयाबीन (प्रतिग्राम में ८ मिग्रा.), सूखी दालें (प्रतिग्राम में ७.४ मिग्रा.), मटर दाने (प्रतिग्राम में ५ मिग्रा.), उबला बथुआ, पालक (प्रतिग्राम में ५ मिग्रा.) आयरन होता है। हमें रोजाना १५–२० मिलीग्राम आयरन खाना चाहिए।

धार्मिक शीतला देवी

साभार सत्यचक्र

शीतला माता एक प्रसिद्ध हिन्दू देवी हैं। इनका प्राचीनकाल से ही बहुत अधिक माहात्म्य रहा है। स्कंद पुराण में शीतला देवी का वाहन गर्दभ बताया गया है। ये हाथों में कलश,

सूप, मार्जन (झाड़ू) तथा नीम के पत्ते धारण करती हैं। इन्हें चेचक आदि कई रोगों की देवी बताया गया है। इन बातों का प्रतीकात्मक महत्त्व होता है। चेचक का रोगी व्यग्रता में वस्त्र उतार देता है। सूप से रोगी को हवा दी जाती है, झाड़ू से चेचक के फोड़े फट जाते हैं। नीम के पत्ते फोड़ों को सड़ने नहीं देते। रोगी को ठंडा जल प्रिय होता है अतः कलश का महत्त्व है। गर्दभ की लीद के लेपन से चेचक के दाग मिट जाते हैं। शीतला मंदिरों में प्रायः माता शीतला को गर्दभ पर ही आसीन दिखाया गया है। शीतला माता के संग ज्वरासुर–ज्वर का दैत्य, ओलै चंडी बीबी–हैजे की देवी, चौंसठ रोग, घेंटुकर्ण, त्वचा–रोग के देवता एवं रक्तवती–रक्त संक्रमण की देवी होते हैं। इनके कलश में दाल के दानों के रूप में विषाणु या शीतल स्वास्थ्यवर्धक एवं रोगाणु नाशक जल होता है।

स्कन्द पुराण में इनकी अर्चना का स्तोत्र शीतलाष्टक के रूप में प्राप्त होता है। ऐसा माना जाता है कि इस स्तोत्र की रचना भगवान शंकर ने लोकहित में की थी। शीतलाष्टक शीतला देवी की महिमा गान करता है, साथ ही उनकी उपासना के लिए भक्तों को प्रेरित भी करता है। शास्त्रों में भगवती शीतला की वंदना के लिए यह मंत्र बताया गया है:

'वन्देऽहंशीतलांदेवीं
रासभस्थांदिगम्बराम्।।
मार्जनीकलशोपेतां
सूर्पालंकृतमस्तकाम्।।

अर्थात गर्दभ पर विराजमान, दिगम्बरा, हाथ में झाड़ू तथा कलश धारण करने वाली, सूप से अलंकृत मस्तक वाली भगवती शीतला की मैं वंदना करता हूँ। शीतला माता के इस वंदना मात्र से यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि ये स्वच्छता की अधिष्ठात्री देवी हैं। हाथ में मार्जनी झाड़ू होने का अर्थ है कि हम लोगों को भी सफाई के प्रति जागरूक होना चाहिए। कलश से भी हमारा तात्पर्य है कि स्वच्छता रहने पर ही स्वास्थ्य रूपी समृद्धि आती है। मान्यता अनुसार इस व्रत को करने से शीतला देवी प्रसन्न होती हैं और व्रती के कुल में दाहज्वर, पीतज्वर, विस्फोटक, दुर्गन्धयुक्त फोड़े, नेत्रों के समस्त रोग, शीतलाकी फुंसियों के चिन्ह तथा शीतलाजनित दोष दूर हो जाते हैं।

गुड़गाँव में है शीतला माता का प्रसिद्ध मंदिर

गुड़गाँव का नाम आते ही सबसे पहले हमारे जहन में एक बड़ी चमकदार ईमारतों वाले शहर की तस्वीर उभरती है। गुड़गाँव नाम सुनते ही साइबर सिटी भी हमारे दिमाग में आ जाता है। लेकिन जब हरियाणा, उत्तर प्रदेश विशेषकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान के गाँव में आप जब भी गुड़गाँव का जिक्र करेंगे अनायास ही लोगों के जहन में गुड़गाँव वाली माता आती है। आइये आपको बताते हैं हरियाणा के गुड़गाँव स्थित माता शीतला मंदिर के बारे में।

शीतला मंदिर का महत्त्व

गुड़गाँव स्थित शीतला मंदिर में वैसे तो देश भर के श्रद्धालु आते हैं लेकिन ज्यादा संख्या हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और राजस्थान के श्रद्धालुओं की होती है। नवरात्र के दिनों में शीतला माता के मंदिर में भारी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। साल में दो बार चैत्र नवरात्र और आश्विन नवरात्र के समय शीतला माता के इस मंदिर का नजारा अदभुत होता है। दोनों नवरात्रों में एक महीने तक मेला लगता है। श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ने लगती है, इस दौरान लगभग ५० लाख श्रद्धालु माता के दर्शन करने आते हैं। माता भी इस समय भक्तों का इम्तिहान लेती हैं जिन्हें माँ के दर्शन के लिए घंटों लाइन में खड़े रहना पड़ता है, इसके बाद माता के दर्शन कर भक्त अपने को धन्य समझते हैं। शीतला माँ के इस मंदिर की खासियत यह भी है कि श्रद्धालु, नवजात बच्चों का प्रथम मुंडन संस्कार यहीं पर करवाना शुभ मानते हैं। मंदिर प्रशासन को भी मुंडन के ठेके से लाखों की आमदनी होती है, जिसे मंदिर के विकास व आयोजनों में खर्च किया जाता है।

क्या है शीतला माँ की मान्यता

शीतला माता सनातन (हिंदू) धर्म में आस्था रखने वालों की एक प्रसिद्ध देवी हैं। इन्हें संक्रामक रोगों से बचाने वाली देवी कहा जाता है। स्कंद पुराण में इनका जिस प्रकार से वर्णन किया गया है उसके अनुसार इन्हें स्वच्छता की देवी भी कहा जा सकता है। देहात के इलाकों में तो स्मालपोक्स (चेचक) को माता, मसानी, शीतला माता आदि नामों से जाना जाता है। मान्यता है कि शीतला माता के कोप से ही यह रोग पनपता है इसलिए इस रोग से मुक्ति के लिए आटा, चावल, नारियल, गुड़, घी इत्यादि सीद्धा माता के नाम पर रोगी श्रद्धालुओं से रखवाया जाता है। पौराणिक ग्रंथों में प्राचीन काल से ही शीतला माता का माहात्म्य बहुत अधिक माना गया है। स्कंद पुराण के अनुसार इनका वाहन गर्दभ बताया गया है। ये अपने हाथों में कलश, सूप, झाड़ू एवं नीम के पत्ते धारण करती हैं। इन सब का चेचक जैसे रोग से सीधा संबंध भी है। एक ओर कलश का जल शीतलता देता है तो सूप से रोगी को हवा की जाती है, झाड़ू से जो छोटे–छोटे फोड़े निकलते हैं वो फट जाते हैं। नीम के पत्ते उन फोड़ों में सड़न नहीं होने देते। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि माता शीतला की कृपा से रोगी के रोग नष्ट हो जाते हैं।

गुड़गाँव के शीतला मंदिर की कहानी

पौराणिक : गुड़गाँव स्थित शीतला माता के मंदिर कहानी को महाभारत शेष पृष्ठ 10 पर

जेएनयू, बीएचयू सहित ६२ उच्च शिक्षण संस्थान स्वायत्त

जेएनयू, बीएचयू और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय सहित देश के ६२ उच्च शिक्षण संस्थान अब यूजीसी की दखलंदाजी से मुक्त होंगे। यह सभी अब अपनी जरूरत के मुताबिक नए कोर्स और विभाग चालू कर सकेंगे। इसके लिए इन्हें अब यूजीसी के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे।

केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने मंगलवार को यूजीसी बोर्ड की मीटिंग के बाद ६२ उच्च शिक्षण संस्थानों को स्वायत्तता प्रदान करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि यूजीसी के तय मापदंडों को पूरी तरह से मानने और नैक की रैंकिंग में शीर्ष स्थान प्राप्त करने के बाद इन संस्थानों को स्वायत्त बनाया है।

ये सभी संस्थान बगैर यूजीसी की अनुमति के ही जहां नए कोर्स और विभाग चालु कर सकेंगे, वहीं वह ऑफ कैंपस गतिविधियां, रिसर्च पार्क, कौशल विकास के नए कोर्स और विदेशी छात्रों की प्रवेश के नए नियम बना सकेंगे। इसके अलावा वह सरकार के तय वेतनमान से भी ज्यादा वेतन पर अच्छी फैकेल्टी नियुक्त कर सकेंगे। इसके साथ ही जिन कालेजों को स्वायत्तता प्रदान की गई है, उन्हें भी नए कोर्स और विभाग शुरू करने की अनुमति रहेगी। वह परीक्षा का मूल्यांकन भी कर सकेंगे, लेकिन डिग्री उन्हें विश्वविद्यालय से मिलेगी।

प्रतिक्रिया

१. गांधीवादी केन्द्रीय सरकार का उपरोक्त निर्णय हर प्रकार से अराष्ट्रीय और घोर निन्दनीय है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं।

२. जे एन यू दिल्ली शुरू से ही अराजक–अपराधी–अलगाववादी तत्वों का गढ़ रहा है। अब शरारती तत्वों का मनोबल बढ़ेगा।

३. ए एम यू अलीगढ़ देश विभाजन समर्थकों का केन्द्र रहा था। खण्डित भारत में अल्पसंख्यक स्वरूप बनाने में सफल हो गया था लेकिन आपातकाल में इंदिरा गांधी ने इसे राष्ट्रीय स्वरूप का बना दिया था। कुछ वर्षों के बाद इसने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अपील की थी कि इसे पुनः अल्पसंख्यक स्वरूप बना दिया जाए। न्यायालय ने अनुरोध अस्वीकार कर दिया था।

४. तत्पश्चात् ए एम यू अलीगढ़ ने सर्वोच्च न्यायालय में अपील की हुई है जिसका निर्णय अभी तक आना बाकी है।

५. मनमोहन सिंह सरकार ने नियमों के विरुद्ध इसकी ५ शाखाएं खोलने की अनुमति दे दी जिनमें तीन चालू भी हो गई हैं।

६. यू जी सी की कमेटी ने सिफारिश की है कि इन तीनों शाखाओं का विलय निकट वर्ती विश्वविद्यालयों में कर दिया जाए क्योंकि ये अवैध हैं।

७. अब ए एम यू अलीगढ़ को भी स्वायत्तता मिल गई है जिसका वे दुरुपयोग कर सकते हैं। उनकी योजन तो प्रत्येक राज्य में शाखा खोलने की है। यदि वे सफल हो जाते हैं तो देश में ए एम यू अलीगढ़ की २६ शाखाएं हो जाएंगी तब देश का इस्लामी करण तेजी से होगा जिसकी दोषी नरेन्द्र मोदी की गांधीवादी सरकार होगी अतः राष्ट्रवादी सतर्क रहें।

८. यदि स्मृति ईरानी की अध्यक्षता में मीटिंग हुई होती तो उसमें ए एम यू अलीगढ़ के बारे में कमेटी द्वारा की गई सभी ६ सिफारिशें स्वीकार कर ली जातीं और ए एम यू अलीगढ़ की अलग पहचान समाप्त हो जाती और वह भी अन्य केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनना शुरू हो जाता तथा उस पर यू जी सी का पूरा नियंत्रण होता।

९. जे एन यू दिल्ली के सामान्य बनाने के लिए एक कमेटी गठित कर दी जाती और उसकी सिफारिशों को लागू कर दिया जाता ताकि अराजक–अपराधी–अलगाववादी –शरारती तत्वों को बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता।

१०. यह हिन्दू का दुर्भाग्य है कि अच्छी सोच–मानसिकता रखने वाली स्मृति ईरानी को मानव संसाधन विकास मंत्री के पद से हटा दिया गया।

आई० डी० गुलाटी, बुलन्दशहर

सड़क नाम परिवर्तन औरंगजेब बनाम ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

✍ वेद त्रिपाठी

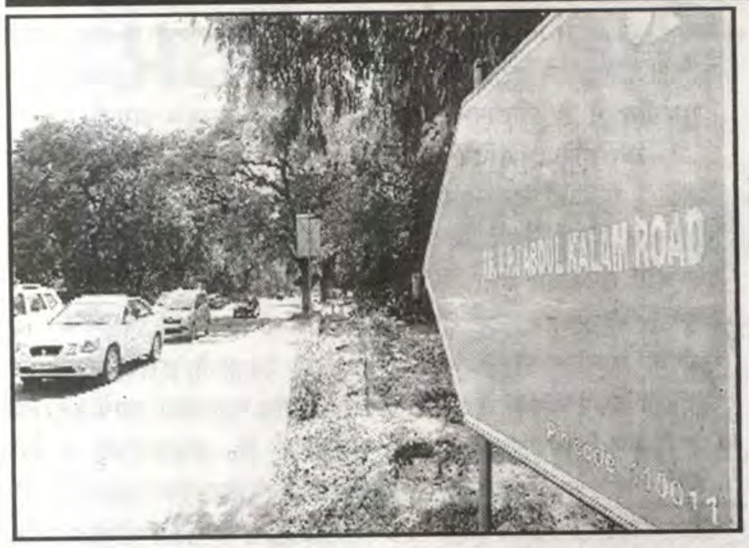

(पिछले अंक का शेष)

औरंगजेब की एक कुशासक के रूप में पहचान

भारतीय इतिहास में औरंगजेब की पहचान बड़े ही स्पष्ट रूप से एक धर्मान्ध तथा बुरे शासक के रूप में है, जिसके शासन का केवल एक ही उद्देश्य था और वह था कि देश को एक कट्टर सुन्नी बहुसंख्यक राष्ट्र के रूप में तब्दील कर देना। उसने जनता को जनता नहीं, सदैव ही साम्प्रदायिक वर्गों के रूप में देखा तथा उनमें भेदभाव करने की सभी सीमाओं का अतिक्रमण कर दिया। वह कोई न्यायप्रिय शासक भी नहीं था। उसका न्याय सम्प्रदाय आधारित था तथा वह उस दिन किसी भी जघन्यतम अपराधी को अपराध मुक्त कर देता था जो इस्लाम ग्रहण करने को तैयार हो जाता था। क्या यही शासन धर्म है? क्या ऐसे किसी शासक के शासन को कोई भी सुशासन कह सकता है? यही नहीं जब भी कहीं किन्हीं दो पक्षों के बीच में कोई भी विवाद होता था (चाहे वह सम्पत्ति का विवाद हो या अन्य कोई) यदि उसमें एक पक्ष मुस्लिम होता था तो फैसला निश्चित रूप से मुस्लिम के पक्ष में होना तय था। क्योंकि ऐसा होना तय था तो दूसरा पक्ष (हिन्दू) न्याय का दरवाजा केवल तभी खटखटाता था जब वह धर्म परिवर्तन करके मुस्लिम हो जाए। जाहिर है तभी कोई ऐसी संभावना बन सकती थी कि मुकदमा उसके पक्ष में हो सके। यदि वह धर्म परिवर्तन को तैयार नहीं होता था, तो यह पूर्व निश्चित होता था कि फैसला उसके विरोध में ही होना था। ऐसी स्थिति में भी बहुत से स्वाभिमानी हिन्दुओं ने इस्लाम ग्रहण करने के बजाय सम्पत्ति खाने या सजा पाना स्वीकार किया।

इसके अतिरिक्त भी, एक शासक के रूप में भी औरंगजेब ने अपने शासनकाल में जनकल्याण की कोई मिसाल नहीं छोड़ी। अन्य सम्प्रदायों को छोड़ भी दिया जाए तो इतिहास ऐसी कोई गवाही नहीं देता कि औरंगजेब ने मुसलमानों के शैक्षिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक कल्याण हेतु किन्हीं श्रेष्ठ नीतियों का निर्माण किया हो। उसने अपने पूरे शासनकाल में, सुन्नी मुसलमानों के लिए भी केवल एकमात्र यही कार्य किया था कि वे सुन्नत के नियमों का अक्षरशः पालन कर रहे हैं या नहीं। उसने ऐसे तमाम धर्माधिकारियों को नियुक्त कर रखा था, जिनका एकमात्र कार्य यह निगरानी करना था कि कोई ऐसा मुसलमान तो नहीं जो पाँच वक्त में से किसी एक वक्त की भी नमाज कजा कर रहा हो या रोजा न रख रहा हो। धार्मिक नियमों के कड़ाई से पालन कराने के अतिरिक्त, शायद ही कोई ऐसा काम रहा हो जो उसने सुन्नी मुसलमानों के वास्तविक कल्याण हेतु कभी-कभी किया हो। यही नहीं उसने शासन, प्रशासन या न्यायिक ढाँचे में कोई सुधार किये हों, ऐसा भी कोई स्पष्ट उल्लेख इतिहास में नहीं है। जहाँ हम बलबन, अकबर आदि तमाम शासकों की शासन-प्रशासन व्यवस्था में लाये गये तमाम सुधारों को आज की पाठ्यपुस्तकों में पढ़ते हैं, वहीं औरंगजेब का ऐसा उल्लेख कहीं नजर नहीं आता है।

औरंगजेब की राजस्व नीति में भी कहीं भी उसकी न्यायप्रियता दर्शित नहीं होती है। राजस्व का मूल सिद्धान्त है कि कर में समानता का व्यवहार हो। किन्तु औरंगजेब के शासनकाल में तो कर भी साम्प्रदायिक आधार पर देय थे। औरंगजेब समर्थकों पर इस बात का क्या स्पष्टीकरण है कि उसके राज्यकाल में हिन्दुओं पर आयात-निर्यात कर मुसलमानों की अपेक्षा पाँच प्रतिशत अधिक देय था।

धर्मोन्मादी शासक

औरंगजेब निश्चित रूप से एक घोर धर्मोन्मादी शासक था। पूर्व शीर्षक में इसके कुछ उदाहरण दिये जा चुके हैं। किन्तु उसका हिन्दू विरोध यहीं तक सीमित नहीं था। हिन्दुओं को सताने और अपमानित करने तथा उनका नैतिक बल गिराने का कोई भी ऐसा हथकंडा नहीं था, जो उसने बाकी छोड़ा हो।

औरंगजेब ने अपने शासनकाल में हिन्दू मंदिरों के विध्वंश का ऐसा तांडव किया था जो उससे पूर्व कम से कम किसी मुगल शासक ने तो नहीं किया था। उसने विभिन्न क्षेत्रों में मुहतासिबों की नियुक्ति कर रखी थी जो स्थान-स्थान पर यही देखते थे कि कहाँ-कहाँ पूजा-अर्चना हो रही है तो उसे कितने अपमानित ढंग से बंद कराया जाये तथा पुजारियों को प्रताड़ित या मौत के घाट उतारा जाये। जो भी मंदिर अधिक आराध्य हों और जिनकी ऊँची मान्यता हो तो उनको विध्वंश किया जाये तथा उन पर मस्जिदें तामीर करा दी जायें। डॉ. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव के अनुसार यह विध्वंश इतना व्यापक तौर पर किया गया कि इस कार्य को अंजाम देने और संगठित रूप से करने हेतु विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट दरोगाओं की भी नियुक्ति की गई थी। काशी विश्वनाथ मंदिर, पाटन में सोमनाथ मंदिर, मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि के मंदिरों को भी इसी विध्वंश की श्रृंखला में धराशायी किया गया। कुछ वामपंथी इतिहासकार औरंगजेब के इस कृत्य को यह कहकर न्यायोचित ठहराने का प्रयास करते हैं कि केवल वही मंदिर तोड़े गये जहाँ काफी मात्रा में सम्पत्ति संचित थी या जहाँ हिन्दू लोग किलेबंदी करते थे। किन्तु यह तर्क बड़ा ही हास्यास्पद लगता है क्योंकि यदि ऐसा था, तो जयपुर राज्य के मंदिर क्यों विध्वंश किये गये जिसके दिल्ली से सम्बन्ध बहुत अच्छे थे। जयपुर राज्य तो मुगल शासन को सभी प्रकार से सहयोग कर रहा था और न तो वहाँ कोई अशान्ति थी, न विद्रोह था और न ही कोई किलेबंदी। (आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, मुगल एम्पायर, पृ. २६६-३००)। इन मंदिरों में न तो कोई हथियार जमा थे और न ही यहाँ से सम्पत्ति लूटने का कोई मूल उद्देश्य रहा होगा। यही नहीं यदि केवल किलेबंदी और सम्पत्ति लूटना उद्देश्य रहा होता तो मंदिर पर कब्जा करने तथा सम्पत्ति हस्तगत करने के बाद बात समाप्त हो जाती। किन्तु वस्तुतः ऐसा नहीं होता था। मंदिरों पर कब्जा करने और लूटने के बाद वहाँ पवित्र गायों के कत्ल होते थे और उनके रक्त से मूर्तियों को नहलाया जाता था। मूर्तियों का तरह-तरह से अपमान होता था, उनको तोड़कर मस्जिदों की सीढ़ियों में लगवा दिया जाता था जैसा कि कटरा केशव देव के मंदिर के साथ हुआ, जहाँ की मूर्ति को तोड़कर आगरा लाया गया और जहाँआरा मस्जिद की सीढ़ियों में चिनवा दिया गया। अतः इस तथ्य की अनदेखी किसी तरह नहीं की जा सकती है कि औरंगजेब का मंदिर ध्वस्तीकरण अभियान केवल सम्पत्ति या किलेबंदी नहीं बल्कि हिन्दुओं के स्वाभिमान पर चोट करने तथा उनका अधिकतम अपमान करना था। यही नहीं उसने मन्दिरों के अलावा गुरुकुलों, गौशालाओं और पाठशालाओं पर भी हमले किये और वहाँ हत्याओं और विध्वंश का तांडव किया। आखिर इन स्थानों पर कौन-सी किलेबंदी थी और कौन-सी सम्पत्ति थी? इन प्रगतिशील इतिहासकारों के पास आखिर इसका क्या कोई उत्तर है? मन्दिर, गुरुकुलों और पाठशालाओं को ध्वस्त करना उसका एक प्रकार से व्यसन था, क्योंकि यह कार्य उसने तब भी किया जब सत्ता पूरी तरह उसके हाथ में नहीं थी और वह दक्षिण का मात्र सूबेदार था।

धर्मान्धता का प्रतीक जजिया

औरंगजेब की धर्मान्धता हिन्दुओं पर जजिया कर लगाने से भी बड़ी स्पष्ट होती है। यह कर मुस्लिम राज्य में हिन्दुओं को सुरक्षा और जीवन रक्षा के नाम पर चुकाना होता था। बड़ी अजीब बात है। राजधर्म यह अपेक्षा करता है कि राजा प्रत्येक नागरिक की समान रूप से सुरक्षा करे, किन्तु किसी एक धर्म के लोगों की सुरक्षा के नाम पर विशिष्ट कर किस प्रकार न्यायोचित हो सकता है? फिर भी बड़ा आश्चर्य है कि कुछ 'प्रगतिशील और धर्मनिरपेक्ष इतिहासकार' औरंगजेब के इस कृत्य को भी उचित ठहराने से बाज नहीं आते हैं और यह दावा करते हैं कि क्योंकि हिन्दू जकात नहीं देते थे, इसलिए उन्हें जजिया देना पड़ता था। यह बड़ा ही बचकाना तर्क है। पहली बात तो जकात स्वयं में न तो कर है और न ही राज्य को अनिवार्य/जकात एक स्वैच्छिक दान है जो प्रत्येक मुसलमान (जिनके पास एक सीमा से अधिक सम्पत्ति हो) के अनिवार्य कर्तव्यों में से एक है। अतः जजिया और जकात की तुलना बचकानी ही नहीं, निश्चित ही मूर्खतापूर्ण है।

औरंगजेब ने अपने राज्यकाल में अप्रैल १२, १६७६ में जजिया लगाने की घोषणा की। जजिया, औरंगजेब की कोई अनोखी खोज नहीं थी। हिन्दू जनता जजिया के अत्याचार के दौर से पहले भी गुजर चुकी थी। किन्तु औरंगजेब ने जजिया को जितना व्यापकता और सख्ती के साथ लागू किया वह संभवतः पहले शायद कभी न हुआ हो। इससे पूर्व हिन्दुओं के कुछ वर्गों को जजिया दैय नहीं भी होता था। कुछ अति दरिद्रों या हिन्दू सैनिकों पर भी जजिया माफ कर दिया जाता था। किन्तु औरंगजेब ने इसे प्रत्येक वर्ग पर सख्ती से लागू किया। क्या राज्य कर्मचारी, क्या व्यापारी, क्या मजदूर और यहाँ तक कि दरिद्रतम ग्रामीण खेतिहर को भी जजिया अदा करना अनिवार्य था। जजिया की तीन श्रेणी थी। प्रथम श्रेणी में ४८ दिरहम, द्वितीय श्रेणी में २४ दिरहम तथा तृतीय श्रेणी में १२ दिरहम, जजिया प्रतिवर्ष देय था। जिससे पता चलता है शेष पृष्ठ 10 पर

जिन्ना की सीधी कार्यवाही थी खुला जिहाद

✍ अजय मित्तल

ब्रिटेन की लेबर सरकार ने मार्च, १९४६ में तीन कैबिनेट मंत्रियों के एक दल को भारत भेजा। इसने भारत को आजादी देने के विषय में जो प्रस्ताव दिए, उसके अनुसार **हिन्दू-बहुल एवं मुस्लिम-बहुत राज्यों को अलग-अलग वर्गों में रखा जाना था और इन राज्यों को यह अधिकार दिया गया कि वे यदि चाहें तो भारत संक्ष से बाहर निकल सकते थे।** यानी कैबिनेट मिशन के प्रस्ताव में पाकिस्तान के बीज छिपे थे।....

किन्तु जिन्ना असंदिग्ध शब्दों में पाकिस्तान योजना की स्वीकृति चाहते थे। उन्होंने **२७ जुलाई, १९४६ को मुस्लिम लीग कार्यकारिणी से चर्चा करने के बाद बम्बई में घोषणा की कि भारत में मुस्लिम राष्ट्र जन्म लेने के लिए छटपटा रहा है, किन्तु अंग्रेज व कांग्रेस दानों किसी न किसी रूप में रोडे अटका रहे हैं।** उनके अनुसार लीग को इस बात के लिए विवश कर दिया गया था कि वह संवैधानिक उपायों का सहारा लेना छोड़कर सीधी कार्रवाई द्वारा अपना अभीष्ट हासिल करे। जब पत्रकारों ने यह जानना चाहा कि क्या इसका अर्थ हिंसक उपाय अपनाने से है तो **जिन्ना ने कहा कि वे हिंसा-अहिंसा के बीच की नैतिक सूक्ष्मताओं में उलझना नहीं चाहते।** हां, सीधी कार्रवाई के लिए उन्होंने १६ अगस्त की तिथि अवश्य घोषित की।

ध्यान दीजिए कि जन्ना ने स्पष्ट रूप से नहीं कहा कि लीग हिंसा करेगी। उन्होंने जिहाद शब्द का तो कहीं जिक्र तक नहीं किया। **यह तो बाद की घटनाओं से जाहिर हुआ कि सीधी कार्रवाई जिहाद का ही दूसरा नाम थी।** १६ अगस्त की तारीख चुनने के पीछे कारण यह था कि उस दिन रमजान मास की १८ तारीख पड़ती थी। रमजान मास के दौरान ही इस्लाम के प्रवर्तक ने बदर की लड़ाई (६२४ ई.) में महत्वपूर्ण जीत हासिल की थी।..**सूक्ष्म रूप से नए जिहादियों को संदेश दे दिया गया कि काफिरों को वैसे ही रगड़ देना है जैसे पैगंबर ने बदर में मक्का के कुरैशों को पराभूत किया था।**

कलकत्ता का नरमेध

हिन्दू समाज १६ अगस्त से पूर्व सीधी कार्रवाई के सही आशय को समझ नहीं पाया। समझ लेता तो संभवतः अपने बचाव का कुछ प्रयास करता। पर लीग को तो अपनी योजना की वास्तविकता हृदयंगम थी। **ज्यों-ज्यों १६ अगस्त का दिन निकट आता गया, लीग, ने सभी छोट-बड़े शहरों में सभा-जुलूस शुरू कर दिए।** सरकारी निषेधों का उल्लंघन किया गया।

बंगाल और सिंध की लीगी सरकार ने १६ अगस्त की छुट्टी घोषित कर दी। बंगाल के प्रीमियर एच.एस. सुहरावर्दी ने धमकी दी कि यदि केन्द्र में कांग्रेस को सत्ता सौंपी गई तो वे अपने प्रान्त को स्वतंत्र घोषित कर देंगे।

उन दिनों अनेक प्रान्तों में पुलिस बल में मुसलमान बहुसंख्यक थे। **सिंध और पंजाब में ७०-७० प्रतिशत तथा संयुक्त प्रांत तथा बंगाल में ५०-५० प्रतिशत पुलिसवाले मुस्लिम थे।** इस स्थिति ने मंडराते संकट की विकरालता को और बढ़ा दिया था। फिर **बंगाल का प्रीमियर तो घोर जिहादी मानसिकता का था। उसने कलकत्ता में १६ अगस्त के नरमेध के लिए स्वयं सारी तैयारियां मुकम्मल की।**

सीधी कार्यवाही दिवस की शुरूआत कलकत्ता में लीग के बड़े–बड़े जुलूसों से हुई। इनमें 'दीन–दीन', **'अल्लाहो अकबर'** तथा **'लड़ के लेंगे हिन्दुस्तान'** के नारे लग रहे थे। फिर **एक विशाल सभा में वक्ताओं ने हिन्दुओं के विनाश की शपथ ली। इसके साथ ही जिहाद की स्पष्ट घोषणा कर दी।** सभा से लौटती सशस्त्र भीड़ ने हिन्दुओं पर सैकड़ों स्थानों पर हमले किए। **पूरे दो दिन एक हत्या, लूटपाट, आगजनी, हिन्दू महिलाओं का अपहरण, बलात्कार का दौर बेरोकटोक चलते रहे। पुलिस या तो निष्क्रिय रही, या हमलावरों का साथ देती नजर आई।**....खुद प्रीमियर सुहरावर्दी पुलिस नियंत्रण कक्ष में बैठे उपद्रवों का संचालन कर रहा था। उधर अंग्रेज गवर्नर एफ. बरौज अंधा–बहरा बना रहा।

कुछ अन्तराल के पश्चात हिन्दुओं की समझ में आ गया कि यदि सम्पूर्ण विनाश से खुद को बचाना है तो आत्मरक्षा ही एकमात्र साधन है तो तीसरे दिन उन्होंने संगठित प्रत्याक्रमण शुरू कर दिए। जल्दी ही मुस्लिम उपद्रवी पस्त होने लगे। उन्हें करारा जवाब मिला। आखिर तो कलकत्ता एक हिन्दू–बहुल नगर था।

ज्यों ही मुसलमान पिटने शुरू हुए, गवर्नर ने सेना बुला ली। उसे उपद्रवियों को देखते ही गोली मारने का आदेश था। सब मिलाकर **चार दिन में १०,००० लोगों की हत्या हुई और १५,००० लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।** एक लाख लोगों को बेघरबार करने के बाद उपद्रव रुका।

'स्टेट्समैन' के ब्रिटिश संवाददाता किम क्रिस्टेन ने लिखा है, **''युद्ध के अनुभव ने मुझे कठोर बना दिया है, किन्तु वह भी इतनी भयानक विभीषिका वाला नहीं होता। यह दंगा या महज उन्माद नहीं था। इसके लिए तो शब्द मध्ययुग में से खोजना होगा।''**

कलकत्ता में सेना के कमांडिंग ऑफिसर ने वाइसराय लॉर्ड वैवल तर्क इस महापराध में सुहरावर्दी की सीधी संलिप्तता की खबर पहुंचाई। वैवल ने स्वयं कलकत्ता आकर विनाशलीला के बाद कराहते हुए नगर को देखा। तब उनकी सोच इन शब्दों में प्रगट हुई थी......

'मुस्लिम लीग को किसी तरह केंद्र की अंतरिम सरकार, जो इस बीच २ सितम्बर, १९४६ को नेहरू के नेतृत्व में शपथ ले चुकी थी, में शामिल कर जिम्मेदारी देनी होगी, वरना भविष्य में ऐसी विनाशलीला की पुनरावृत्ति संभव है।'' २६ अक्टूबर को पांच लीगी सदस्य केन्द्र सरकार में शामिल हो भी गए, पर जैसा कि आगामी घटनाओं ने साबित कर दिया, लीग ने अंतरिम सरकार को ही सीधी कार्रवाई का एक फंट बना डाला।

नोआखाली और तिप्परा

अक्टूबर के मध्य में लीग ने बंगाल में दो स्थान–नोआखाली और तिप्परा–सीधी कार्रवाई हेतु चुने। **यहां हिन्दू बेहद अल्पसंख्या में थे तथा कलकत्ता के समान हिन्दू प्रत्याक्रमण की संभावना नहीं था।** इसलिए जिहादियों ने मनमाना ताण्डव किया।

जब वरिष्ठ कांग्रेसी नेता आचार्य कृपलानी न गवर्नर एफ. बरौज से हिन्दू महिलाओं की नारकीय दुर्दशा, उनके अपहरण, बलात्कार और जबरिया निहार की चर्चा की तो उसका **निर्लज्ज उत्तर था इसमें अस्वाभाविक क्या है? हिन्दू महिलाएं मुसलमान महिलाओं से ज्यादा रूपवती होती ही हैं।....**

नोआखाली–तिप्परा में छिड़ा विध्वंस कई सप्ताह चला और केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में लीग के प्रवेश के बाद भी रुका नहीं। लीग द्वारा प्रशिक्षित सशस्त्र 'मुस्लिम नेशनल गार्ड' सब जगह मुस्लिम गुंडों का नेतृत्व करते **सबसे पहले हिन्दू नेताओं, जमींदारों व प्रभावशाली लोगों को चुन-चुन कर मारा जाता।** उनकी संपत्ति लूटी जाती। महिलाओं को अगवा किया जाता। फिर सर्वसाधारण हिन्दू का नंबर आता। उसके साथ भी यही दोहराया जाता। नरमेधों की झड़ी लग गई।

राज्य प्रशासन कहीं नजर नहीं आ रहा था। वी.पी. मेनन के अनुसार **सरकारी तंत्र पूरी तरह उदासीन रहा** वाइसराय से हिन्दुओं को बचाने की अपीलें बेकार गईं।

वैवल ने कहा कि केन्द्र द्वारा राज्यों की स्वायत्तता में दखल की जानी चाहिए। मानो **एक आंख वाले वैवल को आर्य हिन्दु समाज दिखता ही नहीं था केवल हिन्दू महासभा के लोग ही डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में हिन्दुओं के घावों पर मरहम लगाने पहुंचे।. .. गांधीजी का दौरा भी हिन्दुओं में विश्वास नहीं भर सका था।** वे नोआखाली के कांग्रेस–समर्थित विधायक गुलाम सरवर द्वारा अगवा हिन्दू लड़कियों को वापस नहीं करा पाए।

बिहार में प्रतिक्रिया और सैन्य दमन

नवम्बर में बिहार के हिन्दुओं में बंगाल की प्रतिक्रिया हुई। **बंगाली हिन्दू लड़कियों को अगवा कर बिहार भी ले जाया गया था। इसके पक्के समाचार मौजूद थे। हिन्दुओं के लिए असहनीय स्थिति थी।** हिन्दुओं ने मुसलमानों से हिन्दू बंगाली लड़कियों को मुक्त कराने की अपील की, पर उन्होंने ठुकरा दी। बंगाल में काम कर रहे बिहारी हिन्दू श्रमिक भयंकर त्रासदी का शिकार बन चके थे। इस कारण बिहार में रोष था। तीसरे, **बिहार में भी लीग ने पत्रक बांटकर मुसलमानों को जिहाद के लिए उकसाना शुरू कर दिया था।** इन सब वजहों से आग भड़क उठी और मुस्लिम गुण्डों को निशाना बनाकर निबटाया गया।

बंगाल की तुलना में, **बिहार में सरकार और केन्द्रीय नेताओं के आचरण में धरती-आकश का अंतर था। बंगाल में तो सारी हिंसा राजरू सरकार द्वारा प्रायोजित थी।** वायसराय ने सर्वाधिक पीड़ित नोआखाली तथा तिप्परा शेष पृष्ठ 11 पर

अवधपुरी यह चरित प्रकाशा श्री मानसारंभ

साभार विनय पत्रिका

(पिछले अंक का शेष)

"जायसी मलिक मुहम्मद, जिसने पद्मावत–अखरावट –आखिरी कलाम आदि की रचना की है?"

"हाँ, वही। आपने उसकी रचनाओं के नाम तो ले लिए किन्तु क्या कभी उन्हें पढ़ा या किसी से सुनीं भी?"

गोस्वामी जी को अस्वीकारोक्ति सूचक शिर हिलाते देखकर गंग बोला–

"महाराज, हमने सुनी भी और कुछ पढ़ने का अवसर भी एक बार मिल ही गया।"

"कैसे, कैसे?"

"अरे होल भैया, हुआ यह कि जायसी की सभी मूल कृतियों की लिपि अरब की किसी भाषा में है। हाँ, स्मरण आया उसकी लिपि फारसी है, क्योंकि जायसी को देवनागरी का ज्ञान तो था नहीं। अवध क्षेत्र के गाँव में बहुत समय रहने से वह अवधी बोलना सीख गया और वहाँ कि निवासियों से हमारी कथाएँ सुन–सुनकर उनसे भी कुछ परिचित हो गया। अतः उसकी भाषा निरक्षरों की सी गँवारू अवधी है। कहीं–कहीं जो संस्कृत के तत्सम शब्द आये हैं, वे उन कथाओं के कारण ही हैं। जो उसने सुनीं। अतः उनकी देवनागरी में प्रतिलिपि कराने अबुलफजल ले आया। एक दिन हम अचानक उसके घर पहुँच गए तो देखी। फिर प्रतिलिपिकारों से उसकी कथा नहीं, कहानी ही कहानी चाहिए, वह अच्छी प्रकार सुनी, कहो तो सुनाएँ–"

"बिना कहानी सुने, समझेंगे क्या?"

"टोडर राजा, यह सत्य है तो सुनिए और उसकी ... इ कल्पना की उड़ान देखिए–

पद्मावत की कथा का ऐतिहासिक आधार चित्तौड़ के महाराणा रत्न सिंह की पत्नी अनिंद्य सुंदरी महारानी पद्मिनी को प्राप्त करने के लिए दिल्ली के कामुक सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़ पर आक्रमण को लेकर है। पद्मिनी मेवाड़ के ही एक चौहान क्षत्रिय हमीर शंख की पुत्री थी। एक तांत्रिक अपने तंत्र बल से उसे प्राप्त करने में असफल होकर लज्जावश प्रतिशोध की अग्नि में जलता हुआ दिल्ली जा पहुँचा। वहाँ उसने पद्मिनी के सौन्दर्य का वर्णन ऐसे उत्तेजक शब्दों में किया कि अपने बूढ़ा चाचा जलालुद्दीन की हत्या धोखे से करने वाला वह नृशंस सुल्तान, जो अपनी अनेकानेक प्रकार की कामुकतापूर्ण गतिविधियों के कारण कुख्यात था, वह एक विशाल सेना लेकर चित्तौड़ पर चढ़ दौड़ा।

निरन्तर छः मास घेरा डालकर भी वह चित्तौड़ दुर्ग में जब प्रविष्ट नहीं हो सका तब उसने एक कुटिल चाल चली। उसने कहलाया कि वह दर्पण में महारानी का प्रतिबिम्ब देखकर लौट जाएगा। राणा ने संघर्ष समाप्त करने के लिए अनमने मन से यह बात मान ली। खिलजी दुर्ग में आया। एक विशेष स्थान से कुछ क्षणों के लिए प्रतिबिंब देखा। लौटते समय राणा औपचारिकतावश उसे छोड़ने दुर्ग के द्वार तक आए। वह उन्हें बातों में फँसाता हुआ कुछ आगे तक ले गया जहाँ अनेक खिलजी सैनिक पहले ही छिपाकर बिठाए हुए थे। उन्होंने अवसर पाकर राणा को बंदी बना लिया। राजपूतों ने भी पद्मिनी–समर्पण के बहाने गोरा नामक पद्मिनी के भाई को पद्मिनी के वेष में और उसके साथ दासियों के वेष में अनेक डोलों में बिठाकर रणबाँकुरों को खिलजी के शिविर में भेज दिया। राणा की मुक्ति के पश्चात् भयंकर युद्ध छिड़ गया। तेरह राणा रणचंडी की भेंट चढ़ गए। तेरह राणा अर्थात् राज्यपरिवार के एक–एक कर बारह युवकों को राणा की प्रतीक तिलक लगा–लगाकर नित्य सेनापति बनाकर रणक्षेत्र में भेजा गया। एक–एक कर सभी के समाप्त होने पर स्वयं राणा केसरिया बाना धारण करने लगे कि तभी सूचना मिली कि किसी रानी ने पुत्र को जन्म दिया है। जिस बालक ने अभी पूरी तरह माता का स्तनपान भी नहीं किया था, उसे उसी दूध का तिलक लगाकर एक सेना का सेनापति बनकर समर में भेज दिया गया। विश्व के इतिहास के इस अनोखे सेनापति के सेनापतित्व में भयंकर युद्ध हुआ किन्तु परिणाम में वही आत्माहुति हुई। स्वयं खिलजी ने उस सद्योजात सेनापति की हत्या एक नये कंस के रूप में अपने हाथों कर डाली। अंत में राणा रत्नसिंह सम्मुख संग्राम में वीरगति को प्राप्त हुए और महारानी पद्मिनी मेवाड़ की चौदह सहस्त्र ललनाओं के साथ जौहर व्रत धारण कर ज्योति में ज्योति जैसी धधकती लपटों में समा गई।"

"जायसी ने बहुत रोचक ढंग से इस ऐतिहासिक कथानक में हेर–फेर किया है। राणा रत्नसिंह को राजा चित्रसेन का पुत्र रतन सेन और हमीर संख की कन्या पद्मिनी को सिंहलद्वीप के राजा गंधर्वसेन की कन्या पद्मावती बना दिया है। राणा की एक और पत्नी के रूप में नागमती की सृष्टि की है। जिस तांत्रिक को राणा ने देश–निकाला दिया, उसने उसका नाम राघवचेतन रख छोड़ा है। एक तोता भी ये श्रीमान् कहीं से पकड़ लाये हैं जो बंजारे का बंदी बन कर चित्तौड़ पहुँच जाता है। वहाँ रतनसेन में पद्मिनी के प्रति और फिर सिंहल द्वीप पहुँचकर पद्मिनी में रतनसेन के प्रति ऐसी आसक्ति उत्पन्न कर देता है कि रतनसेन जोगी बनकर, अपने बीस हजार जोगी चेलों के साथ चित्तौड़ से सिंहलद्वीप नौका के द्वा ग समुद्र पारकर पहुँच जाता है। तोते के द्वारा पद्मिनी को समाचार मिलता है कि रतंनसेन सिंहल आकर धूनी रमाए बैठा है। पद्मिनी उसे देखने जाती है पर 'पद्मावती–पद्मावती' जपता हुआ रतनसेन समाधि में बैठा रह जाता है। शंकर जी प्रकट होकर उसे सिद्ध गुटिका देते हैं। उसके बल पर रतनसेन अपने जोगियों को साथ लेकर गढ़ को घेर लेता है। समस्त देवता उसकी सहायतार्थ आ जाते हैं। तो भी रतनसेन पकड़ा जाता है और उसे सूली पर चढ़ाने की आज्ञा होती है। राजा गंधर्वसेन तोते के समझाने से मान जाता है। चौहान कुल के रतनसेन से पद्मावती का विवाह हो जाता है। फिर उनका विहार है। अन्य जोगियों को भी पद्मिनी जैसी नारियाँ मिल जाती हैं। रतनसेन चित्तौड़ आ जाता है। नागमती और पद्मावती में डटकर विवाद होता है। दोनों रानियों के संतान होती है। राघवचेतन, जिसे यक्षिणी सिद्ध है, वह अमावस्या को चंद्रदर्शन करा देता है। उसके धर्म विरुद्ध कार्य के कारण राजा उसे देश निकाला देता है। वह अपना प्रतिशोध लेने के लिए अलाउद्दीन खिलजी के पास चला जाता है। पद्मिनी के अलौकिक सौंदर्य का वर्णन कर, उसके मन में उसे पाने की अदम्य लालसा जाग्रत कर देता है। फलस्वरूप वह चित्तौड़ पर आक्रमण कर देता है। युद्ध होता है जिसमें खिलजी जीत नहीं पाता। तब दर्पण में प्रतिबिंब दिखाने की बात आती है। खिलजी प्रतिबिंब देखकर लौटते समय राजा को छल से बंदी बना लेता है। फिर शेष कथा राजा का उद्धार, युद्ध, पराजय, जौहर आदि हैं।"

"जायसी ने स्थान–स्थान पर राम–लक्ष्मण, शंकर–पार्वती, लक्ष्मी–शेष, अंगद–हनुमान न जाने किन–किन का अपनी कथा में उनकी मर्यादा के विरुद्ध उपयोग किया है। कहीं रावण के साथ सीता का वर्णन क्या, अनेक अनर्गल बातें, अश्लील श्रृंगार भरा पड़ा है पद्मावत में। भाषा तो ठेठ ग्राम्य है ही, छंदों को मनमाने ढंग से तोड़ा–मरोड़ा है। कुरान के अनुसार मंगलाचरण है और काव्य का अंत होता है–

जौहर भई इस्तिरी, पुरुख भए संग्राम।
पातसाहि गढ़ चूरा, चितउर भा इस्लाम।।

–इस्लाम की उस विजय–गाथा से कहीं हिन्दू उद्वेलित ने हो जाएँ, अतः वह कुटिलतापूर्वक अंत में उपसंहार के रूप में कहता है–

मैं एहि अरथ पंडितन्ह बूझा। कहा कि हम किछु और न सूझा।।
चौदह भुवन जो तर उपराहीं। ते सब मानुस के घट माहीं।।
तन चितउर मन राजा कीन्हा। हिय सिंहल बुधि पदुमिनि चीन्हा।।
गुरु सुवा जेहि पन्थ देखावा। बिन गुरु जगत को निरगुन पावा।।
नागमती यह दुनिया-धंधा। बाँचा सोइ न एहि चित बंधा।।
राघव दूत सोई सैतानू। माया अलाउदीन सुलतानू।।
प्रेम कथा एहि भाँति विचारहु। बूझि लेहु जो बूझै पारहु।।
तुरकी अरबी हिंदुई, भाषा जेती आहिं।
जेहि महँ मारग प्रेम कर, सबै सराहैं ताहि।।

'जायसी कहते हैं कि 'मैंने अपनी पद्मावत की कहानी सुनाकर पण्डितों से अर्थ पूछा। उन लोगों ने कहा कि हमारी समझ में कुछ नहीं आया। इस पर जायसी कहते हैं कि चौदहों भुवन जो कि ऊपर और नीचे स्पष्ट कहे जाते हैं, सब इसी मनुष्य शरीर के भीतर ही हैं। फिर वे अपने पद्मावत काव्य के रूपक को स्वयं स्पष्ट ककरते हुए कहते हैं कि चित्तौड़ तन है, राजा मन है, सिंहल हृदय है और बुद्धि पद्मिनी है। सुआ गुरु है जो रास्ता दिखाता है, बिना गुरु के इस जगत् में निर्गुण ईश्वर को कोई नहीं पा सकता। नागमती संसार है, जिससे कोई बच नहीं पाता, सभी उसमें बँध जाते हैं। राघवचेतन शैतान है और अलाउद्दीन माया है। मैंने यह प्रेम कथा कही, जो इससे कुछ तत्त्व समझ

शेष पृष्ठ 11 पर

रविंद्रनाथ टैगोर की जयंती पर

रविंद्रनाथ टैगोर एक विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार और दार्शनिक थे। वे अकेले ऐसे भारतीय साहित्यकार हैं जिन्हें नोबेल पुरस्कार मिला है। वह नोबेल पुरस्कार पाने वाले प्रथम एशियाई और साहित्य में नोबेल पाने वाले पहले गैर यूरोपीय भी थे। वह दुनिया के अकेले ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाएं दो देशों का राष्ट्रगान हैं। भारत का राष्ट्र–गान 'जन गण मन' और बाँग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बाँग्ला'। गुरुदेव के नाम से भी प्रसिद्ध रविंद्रनाथ टैगोर ने बांग्ला साहित्य और संगीत को एक नई दिशा दी। उन्होंने बंगाली साहित्य में नए तरह के पद्य और गद्य और बोलचाल की भाषा का भी प्रयोग किया। इससे बंगाली साहित्य क्लासिकल संस्कृत के प्रभाव से मुक्त हो गया। रविंद्रनाथ टैगोर ने भारतीय सभ्यता की अच्छाइयों को पश्चिम में और वहां की अच्छाइयों को यहाँ पर लाने में प्रभावशाली भूमिका निभाई। उनकी प्रतिभा का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है की जब वे मात्र ८ साल के थे तब उन्होंने अपनी पहली कविता लिखी थी। १६ साल की उम्र में 'भानुसिम्हा' उपनाम से उनकी कवितायें प्रकाशित भी हो गयीं। वह घोर राष्ट्रवादी थे और ब्रिटिश राज की भर्त्सना करते हुए देश की आजादी की मांग की। जलियांवाला बाग कांड के बाद उन्होंने अंग्रेजों द्वारा दिए गए नाइटहुड का त्याग कर दिया।

प्रारंभिक जीवन : रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म ७ मई १८६१ को कोलकाता के जोड़ासाँ को ठाकुरबाड़ी में हुआ। उनके पिता देवेन्द्रनाथ टैगोर और माता शारदा देवी थीं। वह अपने माँ–बाप की तेरह जीवित संतानों में सबसे छोटे थे। जब वे छोटे थे तभी उनकी माँ का देहांत हो गया और चूँकि उनके पिता अक्सर यात्रा पर ही रहते थे इसलिए उनका लालन–पालन नौकरों–चाकरों द्वारा ही किया गया। टैगोर परिवार 'बंगाल रैनैस्सा' (नवजागरण) के अग्र–स्थान पर था। वहां पर पत्रिकाओं का प्रकाशन, थिएटर, बंगाली और पश्चिमी संगीत की प्रस्तुति अक्सर होती रहती थी। इस प्रकार उनके घर का माहौल किसी विद्यालय से कम नहीं था। उनके सबसे बड़े भाई द्विजेन्द्रनाथ एक दार्शनिक और कवि थे। उनके एक दूसरे भाई सत्येन्द्रनाथ टैगोर इंडियन सिविल सेवा में शामिल होने वाले पहले भारतीय थे। उनके एक और भाई ज्योतिन्द्रनाथ संगीतकार और नाटककार थे। उनकी बहन स्वर्नकुमारी देवी एक कवयित्री और उपन्यासकार थीं। पारंपरिक शिक्षा पद्धति उन्हें नहीं भाती थी इसलिए कक्षा में बैठकर पढ़ना पसंद नहीं था। वह अक्सर अपने परिवार के सदस्यों के साथ परिवार के जागीर पर घूमा करते थे। उनके भाई हेमेंद्रनाथ उन्हें पढाया करते थे। इस अध्ययन में तैराकी, कसरत, जुडो और कुश्ती भी शामिल थे। इसके अलावा उन्होंने ड्राइंग, शरीर रचना, इतिहास, भूगोल, साहित्य, गणित, संस्कृत और अंग्रेजी भी सीखा। आपको ये जानकार हैरानी होगी कि औपचारिक शिक्षा उनको इतनी नापसंद थी कि कोलकाता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में वो सिर्फ एक दिन ही गए।

अपने उपनयन संस्कार के बाद रविंद्रनाथ अपने पिता के साथ कई महीनों के भारत भ्रमण पर निकल गए। हिमालय स्थित पर्यटन–स्थल डलहौजी पहुँचने से पहले वह परिवार के जागीर शान्ति निकेतन और अमृतसर भी गए। डलहौजी में उन्होंने इतिहास, खगोल विज्ञान, आधुनिक विज्ञान, संस्कृत, जीवनी का अध्ययन किया और कालिदास के कविताओं की विवेचना की। इसके पश्चात रविंद्रनाथ जोड़ासाँ को लौट आये और सन १८७७ तक अपनी कुछ महत्वपूर्ण रचनाएँ कर डाली।

उनके पिता देवेन्द्रनाथ उन्हें बैरिस्टर बनाना चाहते थे इसलिए उन्होंने रविंद्रनाथ को वर्ष १८७८ में इंग्लैंड भेज दिया। उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज लन्दन में लॉ की पढाई के लिए दाखिला लिया पर कुछ समय बाद उन्होंने पढाई छोड़ दी और शेक्सपियर और कुछ दूसरे साहित्यकारों की रचनाओं का स्व–अध्ययन किया। सन १८८० में बिना लॉ की डिग्री के वह बंगाल वापस लौट आये। वर्ष १८८३ में उनका विवाह मृणालिनी देवी से हुआ।

कैरियर : इंग्लैंड से वापस आने और अपनी शादी के बाद से लेकर सन १६०१ तक का अधिकांश समय रविंद्रनाथ ने सिआल्दा (अब बांग्लादेश में) स्थित अपने परिवार की जागीर में बिताया। वर्ष १८६८ में उनके बच्चे और पत्नी भी उनके साथ यहाँ रहने लगे थे। उन्होंने दूर तक फैले अपने जागीर में बहुत भ्रमण किया और ग्रामीण और गरीब लोगों के जीवन को बहुत करीबी से देखा। वर्ष १८६१ से लेकर १८६५ तक उन्होंने ग्रामीण बंगाल के पृष्ठभूमि पर आधारित कई लघु कथाएँ लिखीं।

वर्ष १६०१ में रविंद्रनाथ शान्ति निकेतन चले गए। वह यहाँ एक आश्रम स्थापित करना चाहते थे। यहाँ पर उन्होंने एक स्कूल, पुस्तकालय और पूजा स्थल का निर्माण किया। उन्होंने यहाँ पर बहुत सारे पेड़ लगाये और एक सुन्दर बग़ीचा भी बनाया। यहीं पर उनकी पत्नी और दो बच्चों की मौत भी हुई। उनके पिता भी सन १६०५ में चल बसे। इस समय तक उनको अपनी विरासत से मिली संपत्ति से मासिक आमदनी भी होने लगी थी। कुछ आमदनी उनके साहित्य की रायल्टी से भी होने लगी थी। १४ नवम्बर १६१३ को रविंद्रनाथ टैगोर को साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। नोबेल पुरस्कार देने वाली संस्था स्वीडिश अकैडमी ने उनके कुछ कार्यों के अनुवाद और 'गीतांजलि' के आधार पर उन्हें ये पुरस्कार देने का निर्णय लिया था। अंग्रेजी सरकार ने उन्हें वर्ष १६१५ में नाइटहुड प्रदान किया जिसे रविंद्रनाथ ने १६१६ के जलिआंवाला बाग हत्याकांड के बाद छोड़ दिया। सन १६२१ में उन्होंने कृषि अर्थशास्त्री लियोनार्ड एमहर्स्ट के साथ मिलकर उन्होंने अपने आश्रम के पास ही 'ग्रामीण पुनर्निर्माण संस्थान' की स्थापना की। बाद में इसका नाम बदलकर श्रीनिकेतन कर दिया गया। अपने जीवन के अंतिम दशक में टैगोर सामाजिक तौर पर बहुत सक्रीय रहे। इस दौरान उन्होंने लगभग १५ गद्य और पद्य कोष लिखे। उन्होंने इस दौरान लिखे गए साहित्य के माध्यम से मानव जीवन के कई पहलुओं को छुआ। इस दौरान उन्होंने विज्ञान से सम्बंधित लेख भी लिखे।

अंतिम समय : उन्होंने अपने जीवन के अंतिम ४ साल पीड़ा और बीमारी में बिताये। वर्ष १६३७ के अंत में वो अचेत हो गए और बहुत समय तक इसी अवस्था में रहे। लगभग तीन साल बाद एक बार फिर ऐसा ही हुआ। इस दौरान वह जब कभी भी ठीक होते तो कवितायें लिखते। इस दौरान लिखी गयीं कविताएं उनकी बेहतरीन कविताओं में से एक हैं। लम्बी बीमारी के बाद ७ अगस्त १६४१ को उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कह दिया।

यात्रायें : सन १८७८ से लेकर सन १६३२ तक उन्होंने ३० देशों की यात्रा की। उनकी यात्राओं का मुख्य मकसद अपनी साहित्यिक रचनाओं को उन लोगों तक पहुँचाना था जो बंगाली भाषा नहीं समझते थे। प्रसिद्ध अंग्रेजी कवि विलियम बटलर यीट्स ने गीतांजलि के अंग्रेजी अनुवाद का प्रस्तावना लिखा। उनकी अंतिम विदेश यात्रा सन १६३२ में सीलोन (अब श्रीलंका) की थी।

साहित्य : अधिकतर लोग उनको एक कवि के रूप में ही जानते हैं परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं था। कविताओं के साथ–साथ उन्होंने उपन्यास, लेख, लघु कहानियां, यात्रा–वृत्तांत, ड्रामा और हजारों गीत भी लिखे।

संगीत और कला : एक महान कवि और साहित्यकार के साथ–साथ गुरु रविंद्रनाथ टैगोर एक उत्कृष्ट संगीतकार और पेंटर भी थे। उन्होंने लगभग २२३० गीत लिखे इन गीतों को रविन्द्र संगीत कहा जाता है। यह बंगाली संस्कृति का अभिन्न अंग है। भारत और बांग्लादेश के राष्ट्रगीत, जो रविंद्रनाथ टैगोर द्वारा लिखे गए थे, भी इसी रविन्द्र संगीत का हिस्सा हैं। लगभग ६० साल की उम्र में रविंद्रनाथ टैगोर ने ड्राइंग और चित्रकला में रूचि दिखाना प्रारंभ किया। उन्होंने अपनी कला में विभिन्न देशों के शैली को समाहित किया।

राजनैतिक विचार : उनके राजनैतिक विचार बहुत जटिल थे। उन्होंने यूरोप के उपनिवेशवाद की आलोचना की और भारतीय राष्ट्रवाद का समर्थन किया। इसके साथ–साथ उन्होंने स्वदेशी आन्दोलन की आलोचना की और कहा कि हमें आम जनता के बौधिक विकास पर ध्यान देना चाहिए इस प्रकार हम स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के समर्थन में उन्होंने कई गीत लिखे। सन १६१६ के जलियांवाला बाग नरसिंहार के बाद उन्होंने अंग्रेजों द्वारा दी गयी नाइटहुड का त्याग कर दिया। गाँधी और अमबेडकर के मध्य 'अछूतों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल' मुद्दे पर हुए मतभेद को सुलझाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,
माननीय मुख्य न्यायाधीश,
भारत का उच्चतम न्यायालय
भगवान दास रोड,
नई दिल्ली-११०००१

विषयः भारत में जनसंख्या विस्फोट को रोकने के लिये एक विवाह और अधिकतम दो बच्चे पैदा करने का कानून लागू करने व इस पत्र को ही याचिका मान लेने का अनुरोध।

महोदय,

आपको ज्ञात है कि भारत की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। बढ़ती जनसंख्या के कारण देश की प्रगति, संसाधन व विकास प्रभावित हो रही है। इसका बुरा असर देश के पर्यावरण, रोजगार, गरीबी, अशिक्षा और अर्थव्यवस्था पर भी पड़ रहा है। इससे ग्लोबल वार्मिग भी बढ़ रहा है। संसाधन सीमित हैं। इसलिये जनसंख्या विस्फोट से संसाधनों व विकास पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा जागरूकता फैलाने का कार्य तो हो रहा है। परन्तु किसी प्रभावी नीति के अभाव में बढ़ती जनसंख्या विस्फोट स्थिति में पहुंच गई है।

अतः आपसे अनुरोध है कि जनसंख्या विस्फोट को रोकने के लिये भारत सरकार व राज्य सरकारों को निर्देश दिया जाये कि भारत में एक विवाह और अधिकतम दो बच्चे पैदा करने का कानून शीघ्र लागू किया जाये।

इस पत्र को ही याचिका मान लिया जाये।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक) राष्ट्रीय अध्यक्ष
(मुन्ना कुमार शर्मा) राष्ट्रीय महासचिव
(वीरेश त्यागी) राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 6 का

सड़क नाम परिवर्तन औरंगजेब.......

कि तृतीय श्रेणी में भी जजिया की दर अच्छी खासी थी। मनोकी के अनुसार, जजिया को वसूलने वाले लेनदार इसे बेहद सख्ती से वसूलते थे और जहाँ कहीं किसी ने इसमें थोड़ी भी असमर्थता व्यक्त की तो उसकी सजा कठोर थी और उसे घोर अपमान का सामना करना पड़ता था; जिससे घबराकर बहुत से निरीह हिन्दुओं ने मजबूरन इस्लाम धर्म धारण कर लिया। जजिया के साथ एक अजब मजबूरी यह थी कि यह प्रत्येक देनदार को स्वयं और प्रत्यक्ष रूप से अदा करना होता था। अतः असमर्थता की स्थिति में वह अपमान से किसी प्रकार भी नहीं बच सकता था।

औरंगजेब द्वारा आरोपित जजिया की व्यापकता का अनुमान इस तथ्य से भी लगाया जा सकता है कि जजिया की सख्ती से वसूली केवल उन क्षेत्रों में ही नहीं होती थी जो दिल्ली के प्रत्यक्ष रूप से नियंत्रण में थे। बल्कि मुगल सल्तनत के अधीन सभी रियासतों और राज्यों से भी इसकी बड़ी ही निर्ममता और सख्ती के साथ वसूली की जाती थी। इसके बहुत से प्रमाण हैं किन्तु यहाँ एक ही प्रमाण पर्याप्त है और वह है उदयपुर के महाराणा का, जो अपनी गरीब जनता से पर्याप्त मात्रा में यह कर नहीं वसूल सके, अतः इसकी एवज में उन्हें अपने राज्य के मंडल, बेदनोर और पुर नामक स्थान गंवाने पड़े।

हिन्दू परम्पराओं, रीति-रिवाज़ों और तीज त्यौहारों पर प्रतिबन्ध

यह बड़ा आश्चर्यजनक तथ्य है कि कुछ प्रगतिशील इतिहासकारों के एक वर्ग को औरंगजेब एक धर्मनिरपेक्षता का प्रतीक बादशाह दिखाई देता है जबकि उसकी धर्मान्धता और हिन्दू–विरोध को अंधा भी देख सकता है। यदि यह मान भी लिया जाये कि उसने मंदिरों को इसलिए ध्वस्त किया कि वहाँ सम्पत्ति थी और हिन्दू किलेबंदी कर सकते थे, तो उन पर इस बात का क्या कोई जवाब है कि आखिर औरंगजेब ने हिन्दू रीति–रिवाजों, धार्मिक परम्पराओं और यहाँ तक कि सांस्कृतिक गतिविधियों को कुचलने में भी इतनी शक्ति क्यों लगाई? सन् १६८८ में उसने एक राजाज्ञा निकालकर हिन्दुओं के सभी मेलों और त्यौहारों को मनाने पर कड़ी पाबंदी लगा दी तथा जहाँ कहीं भी कोई इस प्रकार के समारोह को करते पकड़ा गया उसे कड़ी से कड़ी सजा दी गई या धर्म परिवर्तन के लिए विवश कर दिया गया। यही नहीं हिन्दुओं का भयानक मानमर्दन करने हेतु उसने केवल कुछ राजपूत सामन्तों को छोड़कर; हिन्दुओं के पालकी में चढ़ने, हाथी या घोड़े पर सवारी करने के सामान्य नागरिक अधिकारों को भी छीन लिया। यही नहीं उसने हिन्दुओं पर तीर्थयात्रा कर भी लगा दिया, जिससे वे अपने पूज्य तीर्थों का भ्रमण न कर सकें। कहने की बात नहीं है कि उसने इस कर को भी इतनी सख्ती से वसूला कि हिन्दुओं का तीर्थ यात्रा का उत्साह ही जवाब देने लगा। पूरी तीर्थयात्रा के दौरान इस कर के नाम पर उन्हें अत्याचार, अपमान और तिरस्कार भोगना पड़ता था जो उनकी मजबूरी थी। यहाँ तक कि हिन्दुओं को गंगा स्नान के लिए भी भारी कर चुकाना पड़ता था। प्रयाग में तो उस समय गंगा स्नान पर हिन्दुओं को ६ रुपये चार आने कर के रूप में अदा करने पड़ते थे। हिन्दुओं पर भेदभावपूर्ण ढंग से लगने वाले करों में कहीं किसी किस्म की ढिलाई न हो जाये, अतः औरंगजेब ने वर्ष १६७१ में यह कुत्सित कार्य भी किया कि उसने सभी हिन्दू रेवन्यू अफसरों को एक आदेश के आधार पर पद मुक्त करके वहाँ सभी मुसलमान अफसरों की नियुक्ति कर दी।

यही नहीं हिन्दू परम्परा के अनुसार यदि हिन्दू अपने मृतकों की अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करना चाहते थे, तो इसके लिए भी उन्हें अतिरिक्त कर चुकाना पड़ता था। खैर है कि वामपंथी इतिहासकारों ने यहाँ यह तर्क अभी तक नहीं दिया है कि औरंगजेब इतना 'महान, दूरदर्शी और पर्यावरण प्रेमी' था कि उसने सदियों पहले यह कर इसलिए लगाया था ताकि गंगा प्रदूषित होने से बच जाये।

(शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 5 का

धार्मिक शीतला देवी.......

काल से जोड़कर देखा जाता है। मान्यता है कि महाभारत काल में गुरु द्रोणाचार्य यहीं पर कौरवों और पांडवों को अस्त्र–शस्त्र विद्या का ज्ञान दिया करते थे। जब महाभारत युद्ध में गुरु द्रोण वीरगति को प्राप्त हुए तो उनकी पत्नी उनके साथ सती हो गई। माना जाता है कि लोगों के लाख मनाने पर भी वे नहीं मानी और १६ श्रृंगार कर सती होने का निश्चय लेकर गुरु द्रोण की चिता पर बैठ गई। उस समय उन्होंने लोगों को आशीर्वाद दिया कि मेरे इस सती स्थल पर जो भी अपनी मनोकामना लेकर पहुँचेगा, उसकी मन्नत जरूरी पूरी होगी।

क्या कहता है शीतला मंदिर का इतिहास

कहा जाता है कि सत्रहवीं सदी में महाराजा भरतपुर ने गुड़गाँव में माता कृपि के सती स्थल पर मन्दिर का निर्माण करवाया और सवा किलो सोने की माता कृपी की मूर्ति बनवाकर वहाँ स्थापित करवाई। कहा जाता है कि बाद में किसी मुगल बादशाह ने मूर्ति को तालाब में गिरवा दिया जिसे बाद में माता के दर्शन के बाद सिंघा भक्त ने निकलवाया। बताया जाता है कि सिंघा भगत के तप को देखकर क्षेत्रीय लोग उनके पाँव पूजने लगे थे।

मूर्ति की स्थापना को लेकर ही एक अन्य रोचक किस्सा कुछ यूं है गुड़गाँव से थोड़ी दूर है फर्रुख नगर वहाँ के एक बढ़ई की कन्या बहुत सुंदर थी। दिल्ली के तत्कालीन बादशाह तक उसकी सुंदरता का जिक्र पहुँच गया। बादशाह ने विवाह की इच्छा प्रकट की लेकिन लड़की के पिता को विधर्मी बादशाह से बेटी की शादी मंजूर नहीं थी। उसने भरतपुर के महाराज सूरजमल से इसकी फरियाद की लेकिन दूसरे राज्य का मसला बताकर उसे टाल दिया। जब मायूस होकर वह लौट रहा था तो युवराज से उसकी मुलाकात हुई और उसने युवराज के आगे गुहार लगाई। इस पर युवराज ने पिता के खिलाफ जाकर विद्रोह करते हुए दिल्ली पर आक्रमण किया। उसने आक्रमण से पहले गुड़गाँव में माता से विजय की मन्नत माँगी और माता के मढ़ को पक्का करवाने का संकल्प लिया। विजयी होने के बाद उसने यहाँ पर माता का पक्का मढ़ बनवाया।

इसी कहानी को एक दूसरे एंगल में भी पेश किया जाता है। इसके अनुसार महाराजा भरतपुर दिल्ली पर चढ़ाई करने के लिए बल्लभगढ़ रुके इसके बाद घोड़े आगे नहीं बढ़ रहे थे। ज्योतिषियों ने बताया कि गुरुग्राम की सीमा में प्रवेश के बाद हम पूजा से वंचित रह गये तब महाराजा ने मन्नत माँगी कि लालकिले को जीतने के उपरांत वह माता की पक्की मढ़ी बनवायेंगे। उपरोक्त कथाएँ ऐतिहासिक साक्ष्यों से कितना मेल खाती हैं यह शोध का विषय हो सकता है। लेकिन हर कथा में माता की महिमा देखी जा सकती है।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 7 का

जिन्ना की सीधी कार्रवाई........

में सेना भेजने से यह कहकर इनकार कर दिया था कि इससे राज्य की स्वायत्तता प्रभावित होगी। किन्तु, **बिहार में हिन्दू प्रतिक्रिया को कुचलने के लिए वैवल ने न सिर्फ सेनी भेजी, बल्कि कई स्थानों पर हिन्दू भीड़ पर वायु सेना द्वारा बम भी गिराए गए।**

नेहरू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य कृपलानी आदि तमाम शीर्ष नेता हिन्दुओं को शांत करने बिहार पहुंचे। गांधी जी भी आ गए। **इन सबके समझाने से हिन्दू न सिर्फ शांत हो गए, अपितु उजड़ चुके मुसलमानों के पुनर्वास में लगे।** उन्होंने उनके लिए चंदा इकट्ठा किया। हिन्दू महिलाओं ने अपने आभूषण दिए। **हिन्दू समाज द्वारा मुस्लिम शरणार्थियों के लिए भोजन-वस्त्र प्रबंध किया गया।** यह सारा परिदृश्य बंगाल से एकदम उलट था। वहां के हिन्दुओं के नसीब में ऐसी कोई सहायता नहीं थी। पर यहां यह उल्लेख भी जरूरी है कि **गांधी जी आदि नेताओं के कहने पर बिहार में मुस्लिम शरणार्थियों के पुनर्वास और सहायता का कार्य प्रभार एक मुस्लिम मंत्री अब्दुल कय्यूम अंसारी को दिया गया। लेकिन अंसारी ने शरणार्थियों के शिविरों को नए-नए षड्यंत्रों का अड्डा बनना दिया।** इस तरह का अनुभव २०१३ के मुजफ्फरनगर दंगों में भी दिखागया।

आगे चलकर इस सीधी कार्रवपाई का विस्तार पंजाब–सिंध में भी हुआ। **देश के बड़े हिस्से में रक्तपात की भीषण घटनाएं हुईं। कांग्रेस नेतृत्व ने इसी कारण विभाजन की मांग के आगे घुटने टेक दिए।** १९४५–४६ के चुनाव में देश की अखण्डता के नाम पर वोट मांगने वाले **नेहरू ने १९६० में पत्रकार लेआनाई मोस्ले के सामने स्वीकार किया था कि लीग द्वारा भड़काई आग ने कांग्रेस को विभाजन मानने पर विवश किया।**

सीधी कार्रवाई से मुस्लिम लीग की मानसिकता दुनिया के सामने बाहर आई, लेकिनन दुर्भाग्य यह है कि आज भी उस मानसिकता को पहचाना नहीं जा रहा है।

शेष पृष्ठ 1 का

७ साल के भारतीय बच्चे ने.......

और बर्फ में चलना काफी पसंद है इसलिए उन्होंने माउंट किलिमंजारो को चढ़ाई के लिए चुना। अफ्रीका के बाद समन्यु अब ऑस्ट्रेलिया पर निगाहें जमाकर बैठे है। उनका कहना है कि वह अगले महीने ऑस्ट्रेलिया के पीक की चढ़ाई कर विश्व रिक र्ड बनाना चाहते हैं। समन्यु की इस उपल्बधी के बाद उनकी मां का कहना है कि वह बहुत खुश हैं क्योंकि उनके बेटे ने रिकार्ड बनाकर भारत का नाम रोशन किया। उन्होंने बताया कि समन्यु के कोच के अलावा वह भी इस सफर में उनके साथ थी। लेकिन रास्ते में तबीयत खराब होने के कारण वह रुक गई, लेकिन उनके बेटे ने हार नहीं मानी और आगे बढ़ता चला गया। उनकी मां का कहना है कि समन्यु मई तक १० चोटियों पर चढ़ाई कर विश्व रिकार्ड बनाना चाहता है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने सात वर्षीय पर्वतारोही समन्यु को बधाई दी है।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 8 का

अवधपुरी यह चरित........

सके, समझ ले। तुर्की, अरबी और हिन्दी जितनी भाषाएँ हैं, उन सबमें जिनमें प्रेम का मार्ग बताया गया है, उसे ही सराहा गया है।'

अन्त में आकर सिद्धान्त–निरूपण में भी जायसी की प्रवृत्ति न बदली। उन्होंने अपने सूफी मत के सिद्धान्तों को हिन्दी नामों से प्रस्तुत किया है और बीच–बीच में हिन्दू–दर्शन को सिद्धान्तों को मिला दिया है।

मुहमद यहि कवि जोरि सुनावा। सुनना जो पेम पीर गा पावा।।
जोरी लाइ रकत कै लेई। गाढ़ी प्रीति नैन जल भेई।।
औ मन जानि कबित अस कीन्हा। मकु यह रहै जगत महँ चीन्हा।।
कहाँ सो रतनसेनि अस राजा। कहाँ सुवा असि बुधि उपराजा।।
कहाँ अलाउद्दीन सुलतानू। कहँ राघौ जेइँ कीन्ह बखानू।।
कहँ सुरूप पदुमावति रानी। कोई न रहा जग रही कहानी।।
धनि सो पुरुख जस कीरति जासू। फूल मरै पै मरै न बासू।।
केइँ न जगत जस बेंचा, केइँ न लीन्ह जस मोल।
जो यह पढ़ै कहानी, हम सँवरै दुई बोल।।

मलिक मुहम्मद जायसी ने यह कहानी जोड़ कर सुना दी, जिसने इस कहानी को प्रेम से सुना और वह पीर(साधु) हो गया अथवा जिसने इस कथा को सुना उसे प्रेम की पीड़ा का अनुभव हुआ। इस कहानी को मैंने खून की लेई लगा–लगाकर जोड़ रखा है और गाढ़ी प्रीति के आँसुओं से भिगोया है। अपने मन में यह समझकर लिखा है कि शायद मेरे मर जाने के बाद भी यह संसार में मेरी निशानी रहे। अब यह राजा रत्नसेन कहाँ हैं और वह तोता कहाँ है जिसने ऐसी बुद्धि उत्पन्न की। वह अलाउद्दीन सुलतान और राघवचेतन कहाँ है, वह रूपवती पद्मावती भी नहीं रही, संसार में उसकी कहानी मात्र रह गयी। वह पुरुष धन्य है जिसकी कीर्ति ऐसी है जैसे फूल की सुगन्ध। फूल तो मर जाता है पर उसकी सुगन्ध नहीं मरती। मेरे कितने हैं जिन्होंने संसार में कीर्ति न बेची हो और जिन्होंने कीर्ति मोल न ली हो। जो इस कहानी को पढ़ेगा वह दो शब्दों में हमें भी याद कर लेगा।

इस पद में कवि ने अपनी रचना के दो प्रयोजन बताये हैं–

१. प्रेम की पीर का अनुभव,
२. कीर्ति की प्राप्ति।

एक अन्य रचना अखरावट में भी–

गगन हुता, नहिं महि हुती, हुते चंद नहिं सूर।
अैसेइ अंधकूप महँ, रचा मुहम्मद नूर।।

और 'ब्रह्म न बिष्णु महेस', 'हिंदु तुरुक दुवौ भए', 'माथ ऊँच मक्का बन ठाऊँ। हिया मदीना नबी के नाऊँ।' आदि एक क्या अनेक बातें हैं।

(शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 1 का

स्वीडन ने भारत की एनएसजी.......

यह कहते हुए विरोध कर रहा है कि भारत ने अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर नहीं किया है। स्वीडन–भारत संयुक्त कार्य योजना के अनुसार प्रधानमंत्री लोफवेन ने हाल ही में भारत के ऑस्ट्रेलिया समूह एजी, वासेनार अरेंजमेंट डब्ल्यू, मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था एमटीसीआर और बैलिस्टिक मिसाइल प्रसार विरोधी हेग की आचार संहिता एचसीओसी में शामिल होने का स्वागत किया और भारत की परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह एनएसजी की सदस्यता का समर्थन किया। स्वीडन ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के विस्तार और सुधार के बाद उसमें भारत की स्थायी सदस्यता का भी समर्थन किया। प्रधानमंत्री मोदी ने स्वीडन के अपने समकक्ष को भारत का समर्थन करने के लिए धन्यवाद कहा। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि भारत की विश्व स्तर पर स्वीकार्यता सर्वाधिक है।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक...150/- रुपये
द्विवार्षिक...300/- रुपये
आजीवन सदस्य...1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

यह भी सच है

अंग्रेजी से मुक्ति के लिये प्रबल इच्छा शक्ति आवश्यक है

भाषा से व्यक्ति की पहचान होती है, ज्ञान की सारी अभिव्यक्ति भाषा से ही संभव है, हर भाषा की अपनी लिपि है, हमारे देश में अनेक भाषाएं बोली और लिखी जाती है, सभ्यता के विकास के साथ ही भाषा और लिपि का विकास होते जाता है इस पर शासन का प्रभाव अत्यधिक पड़ता है। पहले संस्कृत हमारी प्रमुख भाषा थी, लेकिन मुगल काल में उर्दू और फारसी का प्रयोग बढ़ गया। १६वीं सदी के प्रथम दशक में अंग्रेज भारत में आये, व्यवसायी से जब वे शासक बन गये तो उनकी भाषा का प्रभाव देशवासियों पर पड़ने लगा। जैसे–जैसे अंग्रेजी शासन मजबूत होता गया, अंग्रेजी का वर्चस्व भी बढ़ता गया, शासन से जुड़े देशवासियों द्वारा देश की भाषा, मातृभाषा, देशज भाषा का प्रयोग कम होने लगा।

अंग्रेजी बहादूरों की शरण में रहने वाले, उनके चरणों में गिरने वाले भारतीयों की तो जैसे भाषा ही अंग्रेजी हो गयी। शासन से दूर, देहात में बैठे लोगों की भाषा देशज थी, जो आज भी है, लेकिन अंग्रेजी शासन के इर्द–गिर्द रहने वाले पढ़े–लिखे लोगों की भाषा पूरी तरह बदल गयी, उनकी भाषा बदली तो उनके वंशजों की भाषा भी बदल गयी। सभी अंग्रेजी की सेवा में लग गये।

विद्यालयों में भी अंग्रेजी की पढ़ाई होने लगी, अंग्रेजी नौकरी पाने की एक प्रमुख भाषा बन गयी। बल्कि नौकरी में अंग्रेजी की पकड़ ऐसी मजबूत हुई कि आज तक ढ़ीली नहीं हो पायी। सरकारी नौकरियों में अंग्रेजी की पकड़ की मजबूती बहुत आसानी से आंकी जा सकती है। हर सरकारी कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग की बात की जाती है। हिन्दी का प्रयोग करने वालो को पुरस्कृत किया जाता है। हिन्दी निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। हिन्दी की याद की जाती है। इसके लिये साल का एक दिन निर्धारित कर दिया है, जिसे 'हिन्दी दिवस' कहते हैं।

हिन्दी भाषी क्षेत्रों के राजकीय कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग होता है। लेकिन उन्हीं राज्यों में अवस्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों में अंग्रेजी का प्रचलन है। बैंकों और केन्द्र सरकार के उपक्रमों की भी यही स्थिति है। ऐसे ही कार्यालयों में हिन्दी दिवस मनाने की आवश्यकता होती है। लेकिन हिन्दी के प्रयोग का सच्च यह है कि 'हिन्दी दिवस' को 'हिन्दी डे' के रूप में मनाने वाले अपने को अधिक गौरवान्वित अनुभव करते हैं।

हिन्दी दिवस मनाने, हिन्दी में काम करने वालों को पुरस्कृत करने और हिन्दी के प्रयोग के लिए नारा–सूत्र का उपयोग करने का कारण बड़ा स्पष्ट है। ये सारी व्यवस्थाएं इस बात का परिचायक है कि लोग हिन्दी को भूल गये है, उन्हें हिन्दी को याद करना है।

अंग्रेजो के जाने के छह दशक बाद भी हमें 'हिन्दी दिवस' मना कर हिन्दी को याद करना पड़ता है। यह हिन्दी का प्रचार नहीं, उसकी बेचारगी की पहचान है। जिन कार्यालयों मे हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए नारा–सूत्र टंगे हैं, निश्चित तौर पर उन कार्यालयों में हिन्दी का सर्वमुखी प्रयोग नहीं होता है।

हिन्दी की बेचारगी का मूल कारण अंग्रेजीयत है, अंग्रेजी को आगे बढ़ने का माध्यम मान लिया गया है। हिन्दी का समृद भाषा है। इसमें अनेक भाषाओं के शब्द समाविष्ट हैं, इसमें अंग्रेजी शब्दों का भी खूब समावेश हुआ है। अंग्रेजी में दूसरी भाषाओं के शब्दों को पचाने की क्षमता बहुत कम है। फिर भी विदेशी भाषा अंग्रेजी की भाषा के रूप में अपनाये रखना शर्मनाक स्थिति है।

अंग्रेजों की गुलामी से देश भले मुक्त हो गया हो, लेकिन अंग्रेज की गुलाबी से मुक्ति नहीं मिल पायी है। अंग्रेजी क चंगुल से निकल पाना बहुत टेढ़ी खीर नहीं है। सरकारी कार्यालयों और साथ ही साथ का निजी प्रतिष्टठानों के सभी प्रपत्रों का हिन्दीकरण कर दिया जाये तथा पत्राचार में अंग्रेजी भाषा पर रोक लगा दी जाये तो अंग्रेजी से आसानी से मुक्ति मिल सकती है, इसके लिये प्रबल इच्छा शक्ति की आवश्यकता है, जो सरकारी नियमों के दबाव और हिन्दी प्रयोग समितियों के प्रयास से ही संभव है।

अंकुश्री

कबिरा खड़ा बजार में

सजा नहीं सोच बदलनी होगी

कठुआ और उन्नाव में जो कुछ भी हुआ, वैसी घटनाओं पर हमारे समाज को कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए! विश्वभर में भारत इस बात को लेकर बदनाम है कि यहां यौन हिंसा के कारण महिलाएं और बच्चे असुरक्षित हैं और अगर यह सच नहीं है, तब भी ऐसी सोच बन चुकी है। ईमानदारी से खुद के भीतर झांकने और यह पूछने के लिए हमें विदेशी मीडिया का सहारा नहीं लेना चाहिए, बल्कि खुद से यह पूछना चाहिए कि हम कैसे बदल सकते हैं। आखिर वे कौन से कारण हैं, जो हम ऐसी घटनाओं को रोक नहीं पा रहे हैं और ऐसी घटनाओं में कमी लाने के लिए कौन से कदम उठाने की जरूरत है। हमें इस बात को स्वीकार करना होगा कि ऐसी घटनाओं पर रोक लगाने का काम केवल न्याय और पुलिस तंत्र का नहीं है, इस तरह की हिंसा रोकने के लिए सरकार से कदम उठाने के लिए कहकर, असल में हम अपनी भूमिका को नजरअंदाज करते हैं। इस सोच के साथ आइए देखते हैं कि अब सरकार इस मामले में किस तरह के कदम उठा सकती है। यौन उत्पीड़न और दुष्कर्म को रोकने के लिए मूलतः दो काम किये जा सकते हैं। इनमें एक तो कानून बनाने की मांग है। एक मांग जो लोगों द्वारा बार–बार की जाती है, वह है दुष्कर्मी को फांसी, इसके पीछे यह सोच काम करती है कि दोषी को कड़ी सजा से संभावित दुष्कर्मी भयभीत हो जायेंगे और गलत हरकत नहीं करेंगे। लेकिन ऐसी सज़ा का उल्टा असर हो सकता है तथा दुष्कर्म और हत्या के लिए एक समान सजा होने पर यह दुष्कर्मी को पीड़िता की जान लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है, ताकि उसके खिलाफ कोई सबूत ही न बचे। भारत में हत्यारों को मृत्यु दंड दिया जाता है, क्या यह हत्यारों को हतोत्साहित करता है और क्या इससे हत्या की घटना रुकती है, भारत और अन्य देशों में पीड़िताओं को लेकर जो सामान्य कारक है वह यह है कि दुष्कर्म एक गहन व्यक्तिगत अपराध है और किसी भी पीड़िता के लिए इसे साझा करना आसान नहीं होता। भारत में अनेक सामाजिक मुद्दे हैं और उनमें प्रमुख है समाज में महिलाओं की स्थिति एवं उनके साथ होने वाला व्यवहार। दूसरी बात हमारी वह सोच है, जिसमें माना जाता है कि परिवार का सम्मान महिलाओं के शरीर से जुड़ा होता है और जब किसी महिला का उत्पीड़न होता है, तो वह सम्मान नष्ट हो जाता है, हमारी यही सोच पीड़िता को अपने परिवार से भी सच बताने से रोकती है। तीसरा पीड़िता का बयान महिला पुलिस अधिकारी द्वारा ही रिकार्ड किया जाना चाहिए। आमतौर पर महिला पुलिस अधिकारी और पुलिसकर्मी की कमी की वजह से इस कानून का पालन भी नहीं हो पाता है। एक प्रचलित नारा है, न्यूनतम सरकार अधिकतम शासन, लेकिन जब बाकी दुनिया के मुकाबले प्रति व्यक्ति पुलिस, डाक्टर, नर्स आदि की उपलब्धता के आधार पर भारत सरकार के आकार की माप की जाती है, तब ये शब्द अर्थहीन लगते हैं। यौन अपराध रोकने के लिए हमें अपने समाज में और परिवार के स्तर पर महिलाओं के साथ होने वाले व्यवहार में व्यापक बदलाव करना होगा। इस बात को भी सुनिश्चित करना जरूरी है कि यौन हिंसा की रिपोर्टिंग से संबंधित वर्तमान कानून का भारत के सभी पुलिस थानों में पालन किया जाये। यह बहुत ही कठिन कार्य है, लेकिन इससे यौन हिंसा की रिपोर्ट दर्ज कराने की संख्या में वृद्धि होगी। इन सभी कदमों को उठाना मुश्किल है और अधिकांश राजनेता जानते हैं कि ऐसा होना लगभग असंभव है, यही कारण है कि आसान रास्ता चुना जाता है और दुष्कर्मी को फांसी देने की मांग होती है।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 02 मई से 08 मई 2018 तक

प्राप्तेष

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।